वर्ष 45 अंक 12 दिसम्बर 2018

हंसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 12 ● दिसम्बर 2018 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6-7. दिव्य वचन
16. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. अजब-गजब
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

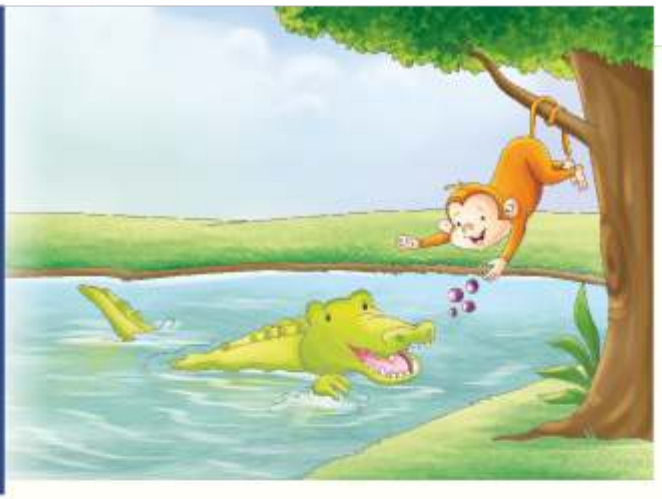

कहानियां

8. कृष्ण और कंस
: सी.एल. गुलाटी

17. बन्दर की चतुराई
: श्यामसुन्दर गर्ग

19. बुंचीलाल की चतुराई
: भूरणदास सौरभ

22. चंपा का बलिदान
: राधेलाल 'नवचक्र'

26. सबसे अच्छा
: डॉ. श्याम मनोहर

27. परोपकार की भावना
: कमल सौगानी

31. बातुनी मेढकी और नीली मछली
: रवजीभाई काचा

33. भावना से कर्तव्य ऊँचा
: जगदीश कौशिक

41. कार्यदक्षता
: जगतार 'चमन'

42. चार चूहे
: घनश्याम देसाई

कविताएं

11. सुन्दर मन
: सुकीर्ति भटनागर

18. ऊर्जा के स्रोत
: डॉ. परशुराम शुक्ल

23. मेहनत, सेहत
: कीर्ति श्रीवास्तव

39. तभी बचेगी अपनी धरती, धरती का आँगन
: हरजीत निषाद

47. प्रार्थना, चिड़िया
: रामअवध राम

विशेष/लेख

10. गजब है गौरैया
: कमल सोगानी

21. सीताफल
: डॉ. विनोद गुप्ता

24. तितलियां कमाल की
: किरण बाला

28. आंवला
: परिधि जैन

40. याक
: डॉ. परशुराम शुक्ल

सबसे पहले

फिर से ...

वर्ष के अन्त में दिसम्बर का महीना आता है। यह अपने साथ अनेक खट्टे-मीठे अनुभव भी लेकर आता है और साथ ही नये वर्ष की आहट का पैगाम भी लाता है।

यह भी सत्य है कि बिना दिसम्बर का महीना समाप्त हुए नया वर्ष आरम्भ नहीं होता। यह समय हमारे द्वारा नववर्ष पर किये गये संकल्पों को भी याद कराता है और उनका आंकलन करने का मौका भी देता है कि बीते समय में हमने क्या-कुछ किया है। इस अवसर का उपयोग हमें कैसे करना चाहिए।

जीवन के विद्यालय में हम विद्यार्थी बन कर आए हैं। हमारे प्रथम शिक्षक माता-पिता बने, फिर स्कूल की शिक्षा में हमने अध्यापकों तथा समाज में रिश्तेदारों और पड़ोसियों से भी सीखा। किसी से हमने चलना सीखा, पढ़ना सीखा, जीवन-यापन का ढ़ंग सीखा तथा सद्आचरण एवं नैतिक शिक्षा भी ली। जन्म से लेकर अब तक हम कुछ न कुछ किसी न किसी से अनेक रूपों में शिक्षा लेते ही रहे हैं।

आज हमने सोचना है कि हमने लिया तो बहुत कुछ है, परन्तु हमने जिनसे भी लिया है उनको हमने दिया क्या है? जैसे-

- ★ माता-पिता ने जन्म दिया। खाना-पीना एवं रहन-सहन सिखाया। प्राथमिक शिक्षा भी दी।
- ★ जिनसे हमने शिक्षा ग्रहण की अर्थात् अपने अध्यापकों, शिक्षकों एवं गुरुजनों को।
- ★ हमारे लिए रोजमर्रा की सुविधाएं जुटाने वाले व्यक्तियों को, आदि-आदि।

और ऐसे अनेकों लोगों का जिनसे हमने सहयोग लिया होगा और आज भी ले रहे हैं, जिन्होंने हमारी परोक्ष रूप से सहायता की है। जैसे- किसान, डॉक्टर, इन्जीनियर, साइंटिस्ट और अनेकों ऐसे लोग जिन्होंने हमारे जीवन को आरामदायक बनाने के लिए कितनी ही परेशानियों को उठाया। हमने सभी सुविधाओं का उपयोग किया है और कर भी रहे हैं।

प्यारे साथियो! हम सभी ने अपनी-अपनी शिक्षा एवं अपनी सामर्थ्य अनुसार कुछ न कुछ तो अवश्य ही दिया होगा और दे भी रहे हैं क्योंकि हमने बचपन से ही देखा है कि हमें जो कुछ भी दिया जा रहा है वह हमारे संस्कारों में स्वत: ही शामिल हो जाता है। फिर भी हमें देखना है कि हमारे देने का ढंग, लक्ष्य और भाव उचित होना चाहिए। हम जो भी करें वह किसी के स्वाभिमान को आहत न करें। हर कार्य को प्रसन्नता के साथ करें, न कि किसी मजबूरी में। हमारा हर कार्य खुशी से किया हुआ होना चाहिए। अपने कर्तव्य को पूरी लगन से पूरा करें।

वर्ष के अन्त में स्वयं को परखने और विचार करने का समय है। अपना मूल्यांकन भी स्वत: ही करना है कि इस वर्ष मेरी कितनी उन्नति हुई है या मैं कितना सफल हुआ हूँ। मुझे अभी कितना परिश्रम और करना है। जिन्होंने भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरा सहयोग किया है उनका भी हृदय से धन्यवाद और आभार व्यक्त करूं ताकि मैं नववर्ष का उल्लासपूर्ण स्वागत कर सकूं।

-विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 176

नाम दे तुल कुझ होर न तुलदा नामी दी वडियाई ए।
बेअन्त अथाह अगोचर रचना जिन्हें रचाई ए।
कण कण अन्दर नाम दा वासा नाम बिनां ना राई ए।
दिसदी ते अणदिसदी दुनियां नाम दे विच समाई ए।
सूरज चन्न तारयां अन्दर नाम दी ही रुशनाई ए।
आण जाण दी इस जग अन्दर नाम ने खेड बणाई ए।
आपे गुप्त ते आपे ज़ाहिर दुनियां कारे लाई ए।
रंग बरंगे माया दे इक जाल'च दुनियां फाही ए।
उच्चा सुच्चा ते वडभागी जिन्हें तैनूं पछाता ए।
कहे अवतार एह नाम विहूणां अन्हा जग दा खाता ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार में प्रभु के नाम के समान उत्तम अन्य कुछ भी नहीं है, सब नामी की ही बड़ाई है। जिसका नाम है वही नामी है, वही प्रशंसा के योग्य है। इस परमात्मा का कोई अन्त नहीं है, इसकी कोई थाह नहीं है, यह अथाह है। इसी ने सारी रचना रचाई है। हर कण, हर ज़र्रे में परमात्मा के नाम का ही वास है, नाम के बिना राई बराबर भी कुछ नहीं है। इस संसार में जो कुछ दृष्टि में आ रहा है या दृष्टि में नहीं आ रहा है, सबमें नाम ही समाया हुआ है। सूर्य, चांद और तारों में जो ज्योति है वह भी इस नाम के कारण ही है। सूर्य का प्रकाश, इसकी ऊर्जा से धरती पर दिन-रात, धूप-छांव और ऋतुएं आदि हैं, यह सब नाम की महिमा का ही विस्तार है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा ने ही यह सारी लीला रची है। स्वयं गुप्त रहकर और प्रकट होकर भी इसने ही सारी दुनिया को कार्य में लगा रखा है। करोड़ों-अरबों लोगों को इस प्रभु की लीला ने गतिशील कर रखा है। सारा संसार इसकी लीला के अन्तर्गत ही कार्य कर रहा है। इसने ही जन्म-मृत्यु का चक्र चला रखा है। हजारों लोग नित्य जन्म लेते हैं और हजारों लोगों की रोज मृत्यु होती है। सबके जीवन चक्र का कारण और आधार यह प्रभु-परमात्मा और इसका नाम ही है।

इस सर्वशक्तिमान परमात्मा ने धरती, पानी, अग्नि, वायु, जीव, आकाश और सूर्य, चांद, सितारों के रूप में रंग-बिरंगी माया की रचना की है। परमात्मा की माया ही इस सारी दुनिया को नाच नचा रही है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि लाखों-करोड़ों में चंद भाग्यशाली ही ऐसे ऊँचे और सच्चे हैं जिन्होंने सद्गुरु की कृपा से इस दातार-प्रभु को जाना है। ऐसे भक्त जानकर इस प्रभु को मान रहे हैं, इसकी भक्ति कर रहे हैं। यह संसार नश्वर है और परमात्मा का नाम ही हमेशा काम आने वाला है। बिना नाम के जो कुछ भी नज़र आ रहा है यह सब व्यर्थ है, किसी काम आने वाला नहीं है।

दिव्य

★ भक्त की पहली पहचान उसकी नम्रता है।

★ क्रोध इन्सान को सदा ही पतन की ओर ले जाता है।

★ विवेक और बुद्धि सत्य का संग करने से ही प्राप्त होते हैं।

★ भक्त सदैव सत्य की शिक्षा ही हृदय में धारण करते हैं।

★ अच्छे गुण सदैव मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं।

★ जिस आदमी को आत्मिक सुख प्राप्त है, वह निर्धन भी धनवान है।

★ कुदरत कादर (प्रभु) के कारण है। जैसे कला, कलाकार के कारण होती है।

★ सदैव सुख देने वाला साधन परमात्मा के नाम (सुमिरण) को ही माना गया है।

★ भक्त, नदी और वृक्ष के समान सदैव दूसरों की सेवा के लिए जीवन जीया करते हैं।

★ ज्ञान और जवाहरात को छिपाकर रखने से उनकी कीमत और आभा नष्ट हो जाती है।

★ दुख अज्ञानता का नाम है जैसे अंधेरा कोई चीज नहीं, इसी प्रकार दुख भी कोई चीज नहीं। प्रकाश हो तो अंधेरा और ज्ञान हो तो वो दुख नहीं होता।

★ भक्त हर हाल में दातार के रंग में रहता है, उतार-चढ़ाव का असर ग्रहण नहीं करता बल्कि हर हाल में खुश रहता है।

– बाबा अवतार सिंह जी

दिव्य वचन

★ सत्य केवल परमात्मा ही है।

★ सदा सज्जनों की संगति करो।

★ क्रोध मनुष्य को पशु बना देता है।

★ चरित्र मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी है।

★ क्रोध को दया से बुराई को भलाई से जीतो।

★ पाप, कपट और अधर्म की जड़ लोभ ही है।

★ मनुष्य जैसी संगत में रहेगा वैसा ही बन जाएगा।

★ मानव से घृणा करना भगवान से घृणा करना है।

★ हमें हर मूल्य पर सत्य का मार्ग अपनाना चाहिए।

★ प्रभु का दान मिलता रहेगा तो यह मन शांत रहेगा।

★ ईश्वर और मनुष्य के बीच की एक कड़ी सद्गुरु है।

★ सत्संग बड़े भाग्य से मिलता है। सत्संग का अर्थ है सत् का संग अर्थात् ईश्वर का संग।

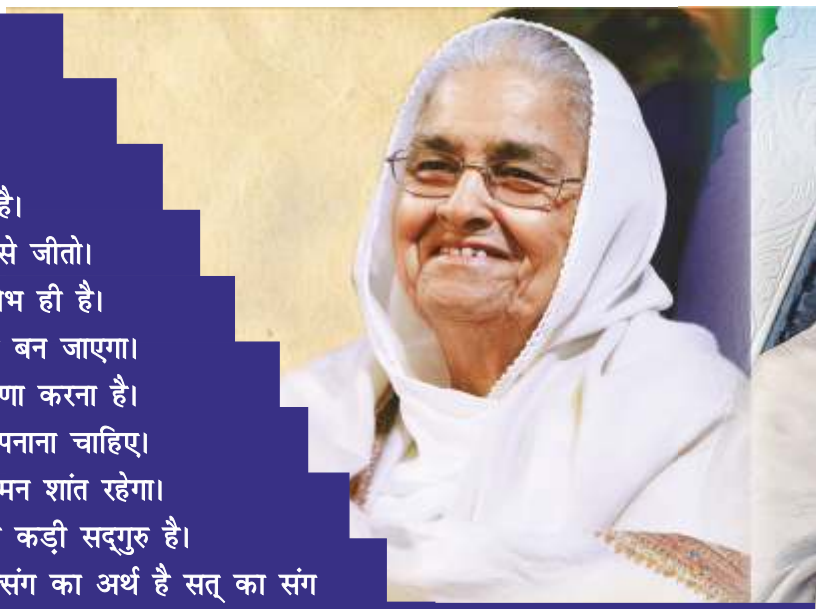

– निरंकारी राजमाता जी

वचन

★ महान भक्ति का अर्थ है– सम्पूर्ण समर्पण।

★ सेवा में जज्बा देखा जाता है। सामर्थ्य नहीं।

★ अहंकार अज्ञानता के अतिरिक्त कुछ नहीं।

★ भक्त और भक्ति की महत्ता हर युग में रही है।

★ सहनशीलता भक्तिमय आचरण का प्रतीक है।

★ अहिंसा के भाव से ही मानवता का बचाव होगा।

★ मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।

★ भक्ति रहित ज्ञान कभी मानसिक शान्ति नहीं देता।

★ मानवता की पहचान परस्पर मिलवर्तन और भाईचारा है।

★ मानव से नफरत करके प्रभु की पूजा नहीं की जा सकती।

★ जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं। वे प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र हैं।

★ आनन्द वो ही प्राप्त करता है जो अपने मन को परमात्मा के साथ जोड़े रखता है।

– बाबा हरदेव सिंह जी

दिव्य वचन

★ दातार कृपा करे हर घर में, हर आंगन में खुशियों की 'बसन्त' हो और ईर्ष्या, नफरत, वैर एवं दु:खों का 'अन्त' हो।

★ जिसके अन्दर अभिमान होता है वहाँ निरंकार नहीं होता और जहाँ निरंकार होता है वहाँ अभिमान कभी ठहर नहीं सकता।

★ अगर आज का नौजवान अपनी ऊर्जा और बुजुर्गों का तजुर्बा लेकर आगे बढ़े तो इस दुनिया में शक्ति प्रेम और समृद्धि आ सकती है।

★ हमें अपने आप पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखना है। कोई क्या कर रहा है। क्या नहीं कर रहा? उसकी तरफ ध्यान ना दें। हम गुरमत की मर्यादा में रहते हुए अपना जीवन जी पा रहे हैं कि नहीं, सिर्फ इस पर ध्यान दें।

★ हर कंधा संयुक्त रूप से मिशन को उस ऊँचाई तक पहुँचाने हेतु प्रयोग किया जाना है, जहाँ बाबा हरदेव सिंह जी इसे पहुँचा हुआ देखना चाहते थे।

★ शहंशाह जी वाला 'सत-वचन' युग परस्पर सहयोग की भावना से ही लाया जा सकता है।

– माता सविन्दर हरदेव जी

— संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

– सी.एल. गुलाटी, सचिव, सं.नि.मं. (दिल्ली)

कृष्ण और कंस

एक बार किसी शहर के लोगों ने मिलकर एक आलीशान मन्दिर बनवाया। उस मन्दिर में मूर्ति स्थापना करने के लिए कई सुझाव आए। उनमें से एक सुझाव यह भी आया कि इस मन्दिर के अन्दर भगवान कृष्ण के बचपन की मूर्ति भी लगाई जाये। सभी लोगों ने इसकी सहमति दे दी।

भगवान कृष्ण की मूर्ति बनाने के लिए उस इलाके के कलाकार से सम्पर्क किया गया और उससे भगवान श्रीकृष्ण के बचपन की मूर्ति बनाने को कहा। कलाकार भगवान कृष्ण की बचपन की मूर्ति बनाने के लिए तैयार हो गया परन्तु उसने यह शर्त रखी कि शहर में जो सबसे सुन्दर बच्चा हो और जो लगभग एक वर्ष की आयु का हो; उसको मेरे सामने बैठाया जाये ताकि मैं उसकी शक्ल से प्रभावित होकर भगवान कृष्ण की मूर्ति बना सकूं। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रबन्धकों को जो बच्चा सबसे सुन्दर लगा उसको उस कलाकार के सामने लाकर बैठा दिया। कलाकार ने उस बच्चे को देखकर बहुत ही सुन्दर मूर्ति बना दी, जिसकी सभी ने सराहना की और उस मूर्ति को बड़ी श्रद्धापूर्वक मन्दिर में स्थापित कर दिया गया।

लगभग 20 वर्ष बाद मन्दिर के प्रबन्धकों में से किसी ने सुझाव दिया कि मन्दिर में एक मूर्ति कंस की भी लगा दी जाए ताकि द्वापर काल का इतिहास जो श्रीकृष्ण और कंस से जुड़ा हुआ है, उसको पूर्ण रूप में दर्शाया जा सके।

सभी लोगों ने उससे सहमति प्रकट की और फिर जिसने भगवान कृष्ण की बचपन की मूर्ति बनाई थी उसी कलाकार को बुलाकर कंस की मूर्ति बनाने के लिए कहा गया। उसने वह मूर्ति

बनाने के लिए अपनी सहमति इस शर्त पर दी कि मूर्ति बनाने से पहले किसी ऐसे व्यक्ति को मेरे सामने लाया जाए जिसके चेहरे से क्रूरता, गुस्सा, ईर्ष्या और नफ़रत की भावना झलकती हो। इस बात को पूरा करने के लिए ऐसे व्यक्ति से सम्पर्क किया गया जो बहुत ही क्रूर स्वभाव का था। उस आदमी को प्यार से समझा-बुझाकर एक बार उस मन्दिर में आने की प्रेरणा दी गई जहाँ पर मूर्ति बनाने वाला कलाकार मौजूद था।

क्रूर व्यक्ति जैसे ही मन्दिर के अन्दर आया तो उसके व्यवहार और चेहरे को देखकर कलाकार बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि कंस की मूर्ति के लिए प्रबन्धक ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ कर लाए थे जिसकी उसे आवश्यकता थी। कलाकार को प्रसन्न देखकर उस व्यक्ति ने कलाकार से बातचीत करनी आरम्भ कर दी। वार्तालाप करते-करते व्यक्ति ने कलाकार से पूछा कि उसने पहले कौन-कौन सी मूर्तियां बनाई हैं। कलाकार मन्दिर के अन्दर तो खड़ा ही था। वह इशारा करके तुरन्त बोला कि यह भगवान कृष्ण के बचपन की मूर्ति लगभग 20 साल पहले मैंने बनाई थी। वह व्यक्ति उस मूर्ति को ध्यान से देखने लगा और उसे याद आया कि यह सुन्दर और आकर्षक मूर्ति किसी और की नहीं बल्कि उसके ही बचपन की थी। यह देखकर सारी जिन्दगी उसकी आँखों के सामने चलचित्र की तरह घूमने लगी। उसको एहसास हुआ कि बचपन में उसका जो कृष्ण का निश्छल रूप दर्शाया गया था वही रूप समय पाकर बुरी संगति के कारण कंस वृत्ति में परिवर्तित हो गया।

उस नौजवान को बहुत दुख हुआ कि वह कितना बदल गया है। उसने यह प्रण किया कि अब से वह बुरे लोगों की संगति छोड़कर सन्तों-महात्माओं की संगति करेगा और अपने बचपन वाले रूप को अपने जीवन में पुनः धारण करेगा जिससे वह एक बार फिर एक अच्छा इन्सान बनकर सामने आ सके।

इससे यह स्पष्ट होता है कि बचपन तो बिल्कुल कोरी स्लेट की तरह होता है लेकिन संगति इन्सान को अच्छा या बुरा बनाती है। यही कारण है कि सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के आदेशानुसार बच्चों को बालसंगत में लाकर उनमें अच्छे संस्कार भरने के प्रयत्न किये जा रहे हैं जिससे कि बच्चे अच्छी संगति में अच्छाइयों को धारण करें और अपने जीवन को उज्ज्वल बनायें।

जानकारी : कमल सोगानी

गजब है गौरैया

हमारे आसपास रहने वाली गौरैया प्राय: दुनिया के सभी देशों में पायी जाती है। इन्हें कई प्रजातियों व रंग रूप में भिन्न-भिन्न स्थानों पर आसानी से देखा जा सकता है। शायद इसीलिए पक्षी विशेषज्ञों ने इसे नाम दिया है 'कामन हाऊस स्पैरो'। हम इसे घरेलू गौरैया के नाम से जानते हैं। इस चिड़िया की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह स्वयं को किसी देश अथवा प्रांत के अनुरूप ढाल सकती है।

गौरैया लगभग सारे संसार में पायी जाती है। इन्हें ऊँचे पर्वतों, यहाँ तक हिमालय पर्वत की श्रृंखला में 8 से 10 हजार फुट की ऊँचाई तक भी देखा जा सकता है। यह अपनी मस्ती में फुदकते, चि चि करते या समूह में अठखेलियां करती नजर आ जाती है। कुदरत ने गौरैया का शरीर बड़ा हल्का-फुल्का बनाया है। इसी कारण इसे उड़ान भरने में अनूठा आनन्द आता है। भोर में सूरज की किरणों के संग-संग इनकी मधुर चि-चिहाट सुनाई देने लगती है। सुबह में दाना-पानी लेकर ये उड़ान पर निकलती है। राह में घने पेड़ों पर कुछ देर विश्राम के उपरांत पुन: स्वतंत्र उड़ान भरने लगती है। उड़ान का सिलसिला सूरज ढलने तक चलता रहता है, फिर ये अपनी नीड़ में लौट आती है।

हमारे देश में गौरैया की दो जातियां पायी जाती हैं। देश के उत्तरी पश्चिमी इलाके में पायी जाने वाली गौरेया जाति की चिड़िया हमारी चिड़िया से थोड़ी बड़ी होती है। गौरैया घरों के आस-पास आसानी से देखी जा सकती है। वह घर के अन्दर जहाँ तक भी पहुँच सकती है, वही अपना घोंसला बना लेती है।

पड़ोसी देशों नेपाल, चीन, तिब्बत, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि में पायी जाने वाली गौरैया की चोंच औसतन लम्बी होती है तथा पंख वाला भाग कुछ ऊँचा होता है। इनके रंग भी कुछ-कुछ भिन्न होते हैं, ये एक बार में 2 से 4 तक अंडे देती है जिनमें से 3-4 सप्ताह उपरांत नन्हें शिशु निकलने लगते हैं। मादा इन्हें तरकीब से अपनी चोंच से दबाकर या पंजों में फंसाकर आसपास की सैर कराती है तथा उड़ान के गुर सिखाती है। धीरे-धीरे बच्चा स्वयं परिपक्व होकर उड़ान भरने लगता है, पूर्ण हृष्ट-पुष्ट होने पर स्वयं का नीड़ बनाता है।

असम के जंगलों में काली गौरैया पायी जाती है। यह बड़ी तेज-तर्रार व गुस्सैली होती है। छेड़ने पर तुरन्त चोंच से प्रहार करती हुई फुर्र से आसमान की ओर उड़ने लगती है।

कविता : सुकीर्ति भटनागर

सुन्दर मन

माँ कितनी प्यारी लगती है,
चिड़ियों की चहक निराली।
दिखने में छोटी-छोटी ये,
हैं कितनी भोली-भाली।।

उन जैसे ही मुझको भी माँ,
सुन्दर पंख दिला दो न।
दूर गगन तक उड़ कर जाऊँ,
उड़ना भी सिखला दो न।।

रंग-बिरंगे मन को भाते,
ये फूल जगत के सारे।
शीतलता कितनी दे जाते,
वे नभ के चाँद सितारे।।

मैं भी महकूं फूलों जैसा,
ऐसी महक दिला दो न।
शीतलता सब मन में भर लूं,
मुझको चाँद बना दो न।।

बेटा, है जिसका मन सुन्दर,
वही चाँद कहलाता है।
जो बांटता महक प्यार की,
फूलों सा बन जाता है।।

जो तुम ऊँचा उड़ना चाहो,
अच्छे गुण अपना लो न।
दु:ख सुख सबका सांझा कर,
उनका हाथ बंटा लो न।।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

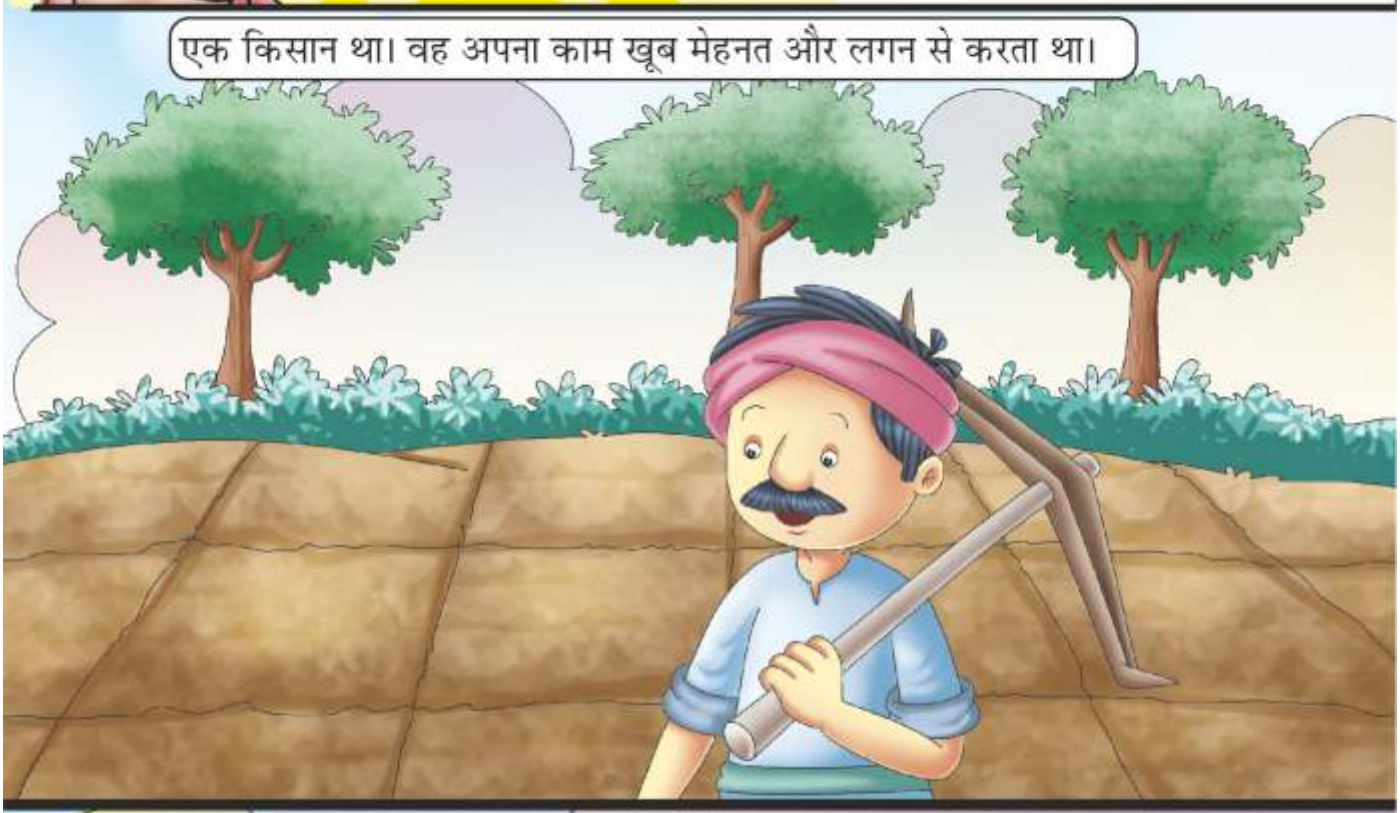

जब वह हलवाई की दुकान के पास गया तो उसे मिठाईयों की खुश्बू आने लगी। किसान अपने आप को रोक नहीं पाया और उसके पास जाकर खड़ा हो गया। किसान वहाँ कुछ देर तक खड़ा रहा और मिठाइयों की सुगंध का आनन्द लेता रहा।

जब हलवाई ने किसान को मजे से उसकी दुकान की मिठाइयों की खूश्बू का आनन्द लेते देखा, तो वह किसान के पास गया।
पैसे निकालो!

किसान हैरान होकर बोला- मैंने न तो तुम्हारे से मिठाई खरीदी है और न ही खाई है। फिर पैसे किस बात के।
किसान की यह बात सुनकर हलवाई उससे झगड़ा करने लगा।

अरे! अरे क्या हुआ? तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो?

किसान ने पूरी बात बताई!
अरे! भाई मैं आपको एक सुझाव देता हूँ।

किसान हलवाई के पास गया। उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें दोनों हाथों के बीच में डालकर खनकाया।

किसान फिर वापस जाने लगा तो हलवाई उसके पीछे चलने लगा और उससे पैसा मांगने लगा।
मेरे पैसे तो दो।
जैसे मिठाई की खुश्बू का आनन्द लेना मिठाई खाने के बराबर ही है तो फिर वैसे ही सिक्कों की खनक सुनना भी पैसे लेने के बराबर ही है।
यह सुन कर सभी लोग जोर-जोर से हँसने लगे और हलवाई शर्मिंदा होकर वापस चला गया।
शिक्षा : सूझ-बूझ से हर समस्या को सुलझाया जा सकता है।

वैज्ञानिकों ने 100 से अधिक बड़े ग्रहों की पहचान की

लॉस एंजिल्स। वैज्ञानिकों ने हमारे सौरमंडल के बाहर 100 से अधिक बड़े ग्रहों की पहचान की है जिनमें जीवन को प्रश्रय देने वाले चंद्रमा हो सकते हैं। यह शोध द एस्ट्रोफिजिकल पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस शोध से भविष्य की दूरबीनों के डिजाइन को निर्धारित करने में मदद मिलेगी जो इन संभावित चंद्रमा का पता लगा सकती हैं और जीवन के संकेतों की तलाश कर सकती हैं।

अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, रीवरसाइड में सहायक प्रोफेसर स्टीफन केन ने कहा, अभी 175 चंद्रमाओं के बारे में पता है जो हमारे सौरमंडल में आठ ग्रहों की परिक्रमा करते हैं। उन्होंने कहा, ज्यादातर चंद्रमा शनि और बृहस्पति ग्रह के चक्कर लगाते हैं जो जीवन को प्रश्रय देने वाले सूर्य के इस क्षेत्र के बाहर हैं लेकिन अन्य सौरमंडल के मामले में ऐसा शायद न हो। शोधकर्ताओं ने 121 बड़े ग्रहों की पहचान की है जो जीवन को प्रश्रय देने वाले अपने ग्रहों के भीतर ही परिक्रमा करते हैं। (भाषा)

चंद्रमा के दूर जाने के कारण लम्बे हो रहे हैं रात-दिन

वॉशिंगटन। चंद्रमा के पृथ्वी से दूर जाने के कारण हमारे ग्रह पृथ्वी पर दिन लम्बे होते जा रहे हैं। एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि 1.4 अरब वर्ष पहले धरती पर दिन और रात महज 18 घंटे के होते थे।

पत्रिका प्रोसिडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज में प्रकाशित यह अध्ययन चंद्रमा से हमारे ग्रह के रिश्ते के गहरे इतिहास को पुन: स्थापित करता है। इसमें पाया गया कि 1.4 अरब वर्ष पहले चंद्रमा पृथ्वी के ज्यादा करीब था और उसने पृथ्वी को अपनी धूरी के चारों ओर घूमने के तरीके को बदला। अमेरिका में विस्कॉन्सिन-मैडिसन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्टीफन मेयर्स ने कहा कि जैसे-जैसे चंद्रमा दूर जा रहा है तो धरती एक स्पिनिंग फिगर स्केटर की तरह व्यवहार कर रही है जो अपनी बाहें फैलाने के दौरान अपनी गति कम कर लेता है।

ब्रह्मांड में पृथ्वी की गति अन्य ग्रहों से प्रभावित होती है जो उस पर बल डालते हैं जैसे कि अन्य ग्रह और चंद्रमा। वैज्ञानिकों ने लाखों वर्षों की अवधि का पृथ्वी की गति का अवलोकन किया और इससे वह पृथ्वी तथा चंद्रमा के बीच की दूरी और दिन के घंटों का पता लगा पाए। (भाषा)

– संकलनकर्ता : बबलू कुमार

प्रेरक-प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

बन्दर की चतुराई

एक नदी में एक मगर रहता था। नदी के समीप ही आम के पेड़ पर बन्दर रहता था। दोनों में गहरी मित्रता थी। बन्दर मगर को मीठे-मीठे आम दिया करता था, मगर भी बन्दर को कुछ न कुछ वस्तुएं दिया करता था। एक दिन मगर ने सोचा कि बन्दर मीठे-मीठे आम खाता है। अत: उसका कलेजा भी बहुत मीठा होगा। उसने बन्दर से कहा– तुम्हारी भाभी ने तुम्हें निमंत्रण दिया है, तुम्हारे लिए पकवान बनाये हैं, तुम्हें घर बुलाया है।

बन्दर बोला– मैं तुम्हारे घर कैसे आ सकता हूँ।

मगर ने कहा– 'तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें अपने घर ले चलूंगा।' मगर प्रसन्न था कि उसे आज बन्दर का कलेजा खाने को मिलेगा। मगर प्रसन्नता के कारण बन्दर से मार्ग में पूछ बैठा कि तुम्हारा कलेजा तो बहुत मीठा होगा।

बन्दर बोला– भ्राताश्री, मेरा कलेजा बहुत मीठा है। क्या तुम्हें कलेजे की जरूरत है? जब मैं तुम्हारी पीठ पर बैठा था, तब तुमने मुझसे कलेजा लेकर चलने के लिए क्यों नहीं कहा? अभी अधिक दूर नहीं आये हैं, तुम वापस चलो, मैं अपना कलेजा पेड़ पर रख आया था। पेड़ से कलेजा लेकर तुम्हारी पीठ पर पुन: बैठकर भाभी के पास चलूंगा।

मगर को कलेजा चाहिए था, वह पुन: तुरन्त लौटकर नदी के किनारे पर आया। बन्दर छलांग लगाकर पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ से वापस नहीं उतरा। मगर ने बन्दर को बार-बार पुकारा कि कलेजा लेकर आओ। बन्दर बोला– 'मैं ऐसे धोखेबाज मित्र के साथ जीवन नहीं गंवा सकता हूँ। मैंने तो अपनी जान बचाने के लिए तुमसे झूठ बोला था। क्या कलेजा शरीर से बाहर रखा जा सकता है?'

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

राष्ट्रीय ऊर्जा दिवस (14 दिसम्बर) पर विशेष

ऊर्जा के स्रोत

पानी और कोयले से हम,
बिजली खूब बनाते।
और रोशनी करके घर को,
चम चम चम चमकाते।।

डीजल औ पेट्रोल डाल हम,
वाहन खूब चलाते।
कारों से लेकर बाइक तक,
सड़कों पर दौड़ाते।।

अणु परमाणु आदि भी बच्चों,
बिजली लगे बनाने।
लेकिन ये सब घातक होते,
सारा जग पहचाने।।

मिल, ऑफिस या सड़कें गलियां,
बिजली सबको प्यारी।
बिजली गुल तो रूक जाती है,
इस जीवन की गाड़ी।।

जनसंख्या बढ़ने के कारण,
बोझ बढ़ रहा भारी।
फ्रिज, एसी, कम्प्यूटर जो भी,
खाते बिजली सारी।।

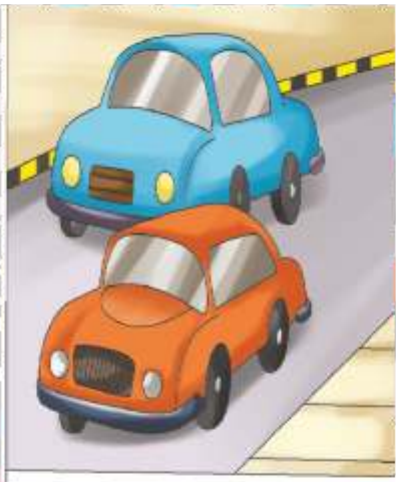

बिजली के ये साधन सीमित,
इसको समझो भाई।
आज अभी से इन्हें बचाओ,
चाहो अगर भलाई।।

आओ अब हम तुमको बच्चों,
एक बात बतलाते।
होती नहीं खत्म जो बिजली,
ऐसा राज बताते।।

सूरज और हवा ये दोनों,
बिजली खूब बनाते।
कारों से लेकर एसी तक,
सबको खूब चलाते।।

इनसे अगर बनाते बिजली,
नहीं प्रदूषण होता।
धरती हरी-भरी रहती है,
कभी नहीं कुछ खोता।।

सूरज और हवा से लेकर,
बिजली काम चलाओ।
ये असीम बिजली के साधन,
अब इनको अपनाओ।।

बाल कथा : भूरणदास सौरभ

= बुंचीलाल की चतुराई =

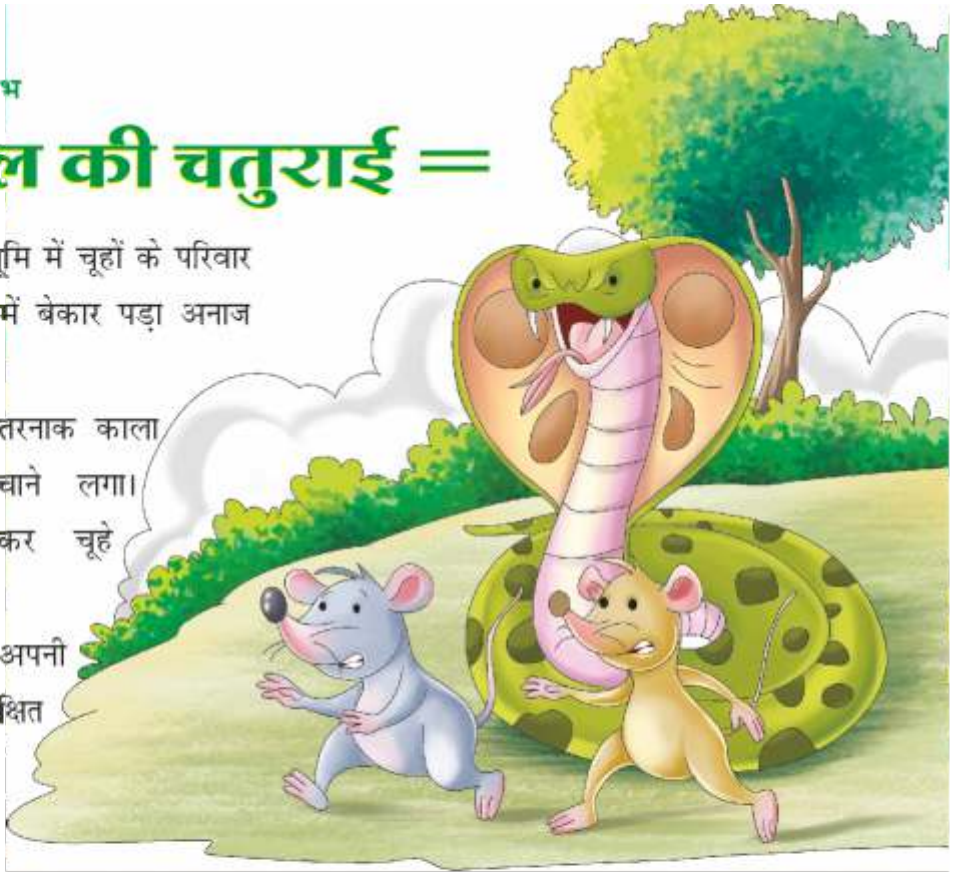

गाँव से कुछ दूर बंजर भूमि में चूहों के परिवार रहते थे। वे पास के खेतों में बेकार पड़ा अनाज खाकर अपना गुजारा करते थे।

एक दिन वहाँ एक खतरनाक काला सांप आकर आतंक मचाने लगा। अपनी-अपनी जान बचाकर चूहे इधर-उधर भागने लगे।

बुंचीलाल नाम का चूहा अपनी चुहिया माँ के साथ किसी सुरक्षित स्थान की ओर भागने लगा।

एक सूखे तालाब के बीच में एक छोटा-सा टीला था। बुंचीलाल अपनी माँ के साथ उस टीले पर चढ़ गया।

फिर उन्होंने रहने के लिए उस टीले में बिल खोदना शुरू किया।

तभी आकाश में काले-काले बादल छाए। तेज हवाएं चलने लगीं। बिजली चमकने लगी और बादल गरजने लगे। फिर थोड़ी देर में मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई।

थोड़ी ही देर में तालाब में पानी भर गया। बिल में भी पानी भर जाने से चुहिया और बुंचीलाल टीले पर बैठ गए।

तेज हवा के झोंके और वर्षा की ठंडी-ठंडी बूंदों से वे थर-थर कांप रहे थे। बुंचीलाल अपनी माँ की गोद में दुबक गया था।

–माँ तालाब में लगातार पानी भरता जा रहा है। थोड़ी देर में यह टीला भी डूब जाएगा, तब क्या होगा– बुंचीलाल ने घबराकर कहा।

बेटा, टीला यदि नहीं भी डूबेगा तो भी हम यहाँ पर भूखों मर जाएंगे। चारों ओर समंदर की तरह पानी ही पानी नजर आ रहा है। हम तैरकर किसी खेत की ओर जा भी नहीं सकते हैं। मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करें।– चुहिया ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा।

तभी आकाश में एक चील मंडराने लगी। वर्षा थम चुकी थी और चील शिकार की टोह ले रही थी।

–माँ! ऊपर देखो, चील हमारी ही टोह में मंडरा रही है। अब हम यहाँ से भाग भी नहीं सकते हैं। अब हम क्या करें?–

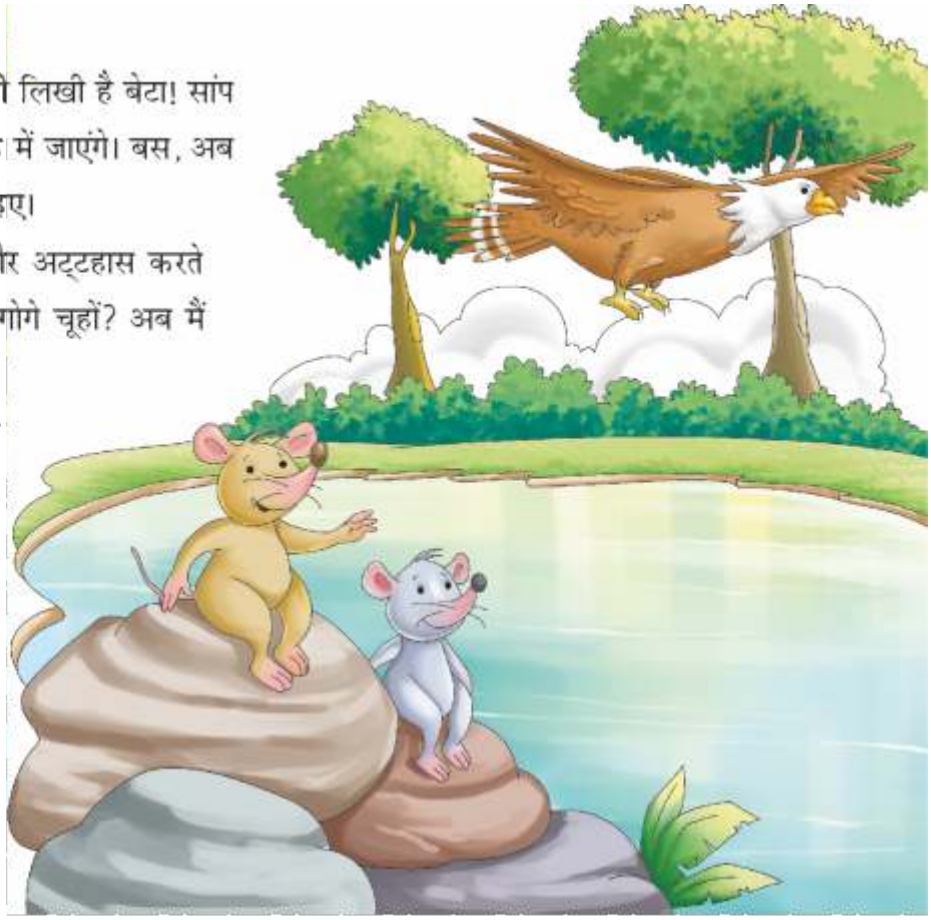

–हमारी किस्मत में मौत ही लिखी है बेटा! सांप के मुँह से बचे तो चील के मुँह में जाएंगे। बस, अब हमें मौत का इंतजार करना चाहिए।

चील टीले पर बैठ गई और अट्टहास करते हुए बोली– अब तुम कहाँ भागोगे चूहों? अब मैं तुम्हें आराम से खाऊँगी।

बुंचीलाल ने हिम्मत जुटाकर कहा– चील चाची, आप तो आकाश की रानी हैं। आप हम जैसे छोटे जीवों को भला क्यों मारेंगी? मारना है तो मोटे ताजे सांप को मारिए।

–क्या कहा? सांप... कहाँ है वह, जल्दी से बताओ।– चील ने जीभ लपलपाते हुए कहा।

–चील चाची, हम उसका पता ठिकाना जानते हैं। यदि आप हमें अपनी पीठ पर बैठाकर...

–नेकी और पूछ-पूछ... चलो, जल्दी से मेरी पीठ पर ठीक से बैठ जाओ।– चील ने कुछ झुकते हुए कहा।

चुहिया और बुंचीलाल चील की पीठ पर बैठ गए। चील आकाश में उड़ चली। बुंचीलाल को बहुत मजा आ रहा था मानो विमान की यात्रा कर रहा हो।

–चील चाची, वह देखो काला और मोटा ताजा सांप, जो मेंढकों के पीछे भाग रहा है।– बुंचीलाल ने बताया।

चील खेत की मेड़ पर उतरी। चुहिया और बुंचीलाल झट चील की पीठ पर से कूदकर एक बिल में छुप गए। चील ने सांप पर झपट्टा मारा। दूसरे ही पल सांप चील के नुकीले पंजों में जकड़ा हुआ छटपटाने लगा। चील सांप को लेकर फिर से आकाश में उड़ गई।

–बेटा, तेरी ही सूझ-बूझ और चतुराई से आज हम माँ-बेटे की जान बची।– कहकर चुहिया ने बुंचीलाल को गले से लगा लिया।

लेख : डॉ. विनोद गुप्ता

सीताफल : स्वादिष्ट ही नहीं, सेहतमंद भी

प्रकृति ने धरती पर तरह-तरह के फल पैदा किए हैं जो न केवल रूचिकर और स्वादिष्ट हैं अपितु सेहतमंद भी हैं। इन्हीं में से एक है सीताफल।

सीताफल का वानस्पतिक नाम अन्नोना स्क्वामोसा है। अंग्रेजी में इसे कस्टर्ड ऐपल कहते हैं। इसे सीताफल के अलावा रामफल, शरीफा के नाम से भी जाना जाता है।

यह मूलत: भारतीय फल नहीं है अपितु वेस्टइंडीज इसका उद्‌गम स्थल है। लेकिन आज यह सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। अक्टूबर से जनवरी यानी चार माह इसकी बहार आती है। इसे कच्चा ही पेड़ से तोड़ लिया जाता है और फिर इसे चूना केमिकल से पकाया जाता है और गत्ते के कार्टून, बक्सों अथवा टोकरियों में भरकर बाजार में प्रस्तुत किया जाता है। डाल पर पके सीताफल अधिक मीठे तथा स्वादिष्ट होते हैं।

सीताफल सभी आवश्यक पोषक तत्वों में परिपूर्ण होता है। इसमें प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण, कार्बोहाइड्रेट और रेशा सभी कुछ होता है। इसमें शर्करा की मात्रा अधिक होती है।

सीताफल में प्रोटीन होने से यह मांसपेशियों को न केवल पुष्ट करता है अपितु उन्हें मजबूत भी बनाता है। बढ़ती उम्र के बच्चों और किशोरों के लिए अधिक लाभदायक है।

सीताफल में विटामिन ए प्रचुर मात्रा में होता है जो नेत्र ज्योति बढ़ाता है। इसके सेवन से त्वचा स्वस्थ और चमकदार बनी रहती है तथा बालों की ग्रोथ होती है। सीताफल हृदय को भी सशक्त बनाता है। इसमें मौजूद मैग्नीशियम हृदय के लिए बहुत जरूरी है।

सीताफल में 4.1 प्रतिशत रेशा होता है जो कि पेट साफ रखता है तथा आंतों में फंसे मल को भी आसानी से बाहर निकाल देता है।

इसमें लोह तत्व भी पाया जाता है जो कि रक्त निर्माण में सहायक होता है। जिन्हें एनीमिया की शिकायत है, उन्हें इसका सेवन अवश्य करना चाहिए।

सीताफल हड्डियों के निर्माण और मजबूती में अहम भूमिका निभाता है क्योंकि इसमें कैल्शियम और फास्फोरस होता है।

सीताफल में बी ग्रुप के विटामिन होते हैं। खासतौर पर बी6 जो कि शरीर के लिए बहुत जरूरी है।

सीताफल एसिडिटी भी दूर करता है तथा ठंडक पहुँचाता है।

पेचिश या दस्त लगने की स्थिति में सीताफल को धूप में सुखाकर उसके गूदे का चूर्ण बनाकर सेवन करने से लाभ होता है।

सीताफल खाने से शरीर को पोषण तो मिलता है लेकिन चर्बी नहीं बढ़ती क्योंकि इसमें वसा नहीं होती।

सीताफल की छाल को आप कम न समझें। इसे सूखाकर पीस लें तथा उसे मंजन के रूप में इस्तेमाल करें। इससे पायरिया की शिकायत नहीं रहेगी तथा दांत स्वस्थ, सुन्दर और मजबूत होंगे।

सीताफल की छाल से आयुर्वेदिक औषधि भी बनाई जाती है।

हिस्टरिया में इसकी पत्तियां सूंघने से लाभ होता है। नारू होने पर प्रभावित भाग पर सीताफल की पत्तियों की पुल्टिस लगाने से लाभ होता है।

सच तो यह कि सीताफल का फल ही नहीं, उसकी बीज, पत्तियां, छाल सभी में औषधीय गुण विद्यमान हैं।

प्रेरक-प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

चंपा का बलिदान

एक छोटा-सा परिवार। अरावली पर्वत की गुफाएं। वहाँ के वन-प्रांतर। भूख-प्यास और भटकाव की अनन्त यात्राएं।

समय ने मोड़ लिया था। परिस्थिति ने करवट बदली थी। महलों में रहने वालों को भी यह दिन देखना पड़ेगा, कहाँ अन्दाज था किसी को।

चंपा! यही नाम था उसका। उम्र यही कोई दस-ग्यारह साल की रही होगी। चंपा और उसके परिवार के लोग तीन दिनों से भूखे थे। आज किसी तरह घास-पात की कुछ रोटियां बन सकी थीं। मगर समय ने साथ नहीं दिया। छल कर बैठा। न जाने कब से एक जंगली बिल्ली घात लगाए बैठी थी। मौका पाकर वह सारी रोटियां चुपचाप खाकर चम्पत हो गई।

पिता का दिल करुणा से भर आया। आँखों से आंसू टपक पड़े। सोचने लगे; बच्ची को आज घास-पात की रोटियां भी नसीब नहीं। हाहाकार कर उठा बाप का कोमल हृदय।

भूला दिया उन्होंने आजादी का महत्व। अपने लिए नहीं, नन्हीं बच्ची के भूख की पीड़ा और छटपटाहट को महसूस कर। लिखने बैठ गया पत्र अकबर को, अधीनता स्वीकार करने वाला।

भूखी चंपा ने यह बात जान लीं वह कोई साधारण नहीं; वीर बाप की बहादुर बेटी थी। स्वाभिमान भरे शब्दों में वह आगे बढ़ पिता की कलम रोकते हुए बोली– "पिताजी! आजादी, त्याग और बलिदान चाहती है। हमें उनसे घबराना नहीं चाहिए। देश और जाति की गौरव रक्षा के लिए अगर हमें मरना भी पड़ेगा तो भी हम पीछे नहीं हटेंगे। सिर कटेगा, झुकेगा नहीं। आपको किसी भी हाल में अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं करनी है, नहीं करनी चाहिए।"

चंपा की ओजस्वी बात ने पिता के सोए हुए स्वाभिमान को फिर से जगा दिया। उन्होंने तत्क्षण बच्ची को प्यार से गोद में ले लिया। कई दिनों की भूखी चंपा पिता की गोद में आराम से ऐसी नींद सोई कि फिर कभी उठी ही नहीं।

धन्य है भारत– हमारा देश। यहाँ की माटी। इस माटी में जन्मी बहादुर बेटियां।

और फिर नये जोश-खरोश, पूरे होश-हवास और स्फूर्ति के साथ महाराणा प्रताप अकबर से लड़ते रहे। मगर कभी उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की। अपने स्वाभिमान और आत्म-सम्मान को पुनः प्राप्त किया।

वो बाल कविताएं :
कीर्ति श्रीवास्तव

मेहनत

मेहनत से न घबराना,
अच्छे काम करते जाना।
मेहनत का फल होता मीठा,
प्रेम से इसको चखते जाना।।

कांटे मिले जो राहों में,
तुम इनसे न डर जाना।
मंजिल पर पहुँचना हो तो,
हर मुश्किल से लड़ जाना।।

लोग लगाएंगे पहरे कई,
तुम दुश्मन को मात दे जाना।
अंधेरा भी झुक जाएगा,
तुम राहों पर बढ़ते जाना।।

सेहत

अगर नहीं पड़ना है बीमार,
सेहत का रखना होगा ध्यान।
गाजर, मूली खूब खाओ,
पढ़ने में अव्वल आ जाओ।।

सेब, अनार, केला खाकर,
ताकतवर तुम कहलाओ।
हरी सब्जियां भी तुम खाओ,
बीमारी को दूर भगाओ।।

सफाई का भी रखना ध्यान,
रोज सुबह करना स्नान।
नाखून सदा कटे रहेंगे,
कीटाणु भी दूर भागेंगे।।

आलेख : किरण बाला

तितलियां कमाल की

दुनिया का सबसे खूबसूरत जीव है तितली। बच्चों को तो ये काफी लुभाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इसकी हजारों प्रजातियां हैं। हर प्रजाति की

अपनी एक विशेषता है। भारत में ही इनकी कोई डेढ़ हजार प्रजातियां पाई जाती हैं।

तितलियों को लेकर तरह-तरह की मान्यताएं भी हैं। जापान में मान्यता है कि यदि तितली किसी के

ड्राइंग रूम में बांस की वस्तु पर आकर बैठ जाए तो किसी प्रियजन का आगमन होता है। चीनी सभ्यता में इसे प्रेम का प्रतीक माना जाता था। प्राचीन यूनानी लोग इसे आत्मा का प्रतीक मानते थे। भारत के कुछ आदिवासी समाजों में तो तितलियों को उनका पूर्वज माना जाता है। कहीं-कहीं तो तितलियों को पुनर्जन्म का प्रतीक भी माना जाता है।

तितलियां सदियों से चित्रकारों तथा कलाकारों को आकर्षित करती रही हैं। यही कारण है कि

कपड़ों, आभूषणों, कलाकृतियों आदि की सुन्दरता बढ़ाने के लिए इन्हें उकेरा जाता है।

आपने अभी तक जितनी भी तितली देखी हैं वे साधारण तितलियां हैं। यदि आपके सामने विश्व की सबसे बड़ी तितली आ जाए, तो आप हैरत में पड़ जाएंगे। न्यूगिनी की क्वीन अलेक्जेंड्रा बर्डविंग के पंखों का फैलाव 280 मिलीमीटर तथा वजन 28 ग्राम तक होता है।

अफगानिस्तान में पाई जाने वाली माइक्रेसाइक एटियाना तितली दुनिया की सबसे छोटी तितली है। जिसके पंखों का फैलाव अधिकतम 7 मिलीमीटर तक हो सकता है।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दुनिया का सबसे बड़ा तितली फॉर्म स्ट्रैटफोर्ड-अपॉन-एवन है। जिसमें 582 वर्गमीटर के उड़ान क्षेत्र में दो हजार से अधिक तितलियां रखी जाती हैं। सन् 1985 में स्थापित हुए इस फॉर्म की उड़ान क्षमता 807 वर्गमीटर है।

तितलियों की समस्त प्रजातियों में सबसे दुर्लभ व कीमती तितली सोलोमन आइलैंड की पक्षी के पंखों जैसी तितली है। सन् 1966 में पेरिस में इसका नमूना 750 पौंड बिका था।

तितलियों का अपना एक इलाका होता है। यदि कोई तितली उनके इलाके में आ जाती है तो ये उसे खदेड़ देती हैं।

तितलियां लम्बी उड़ानें भी भरती हैं। सूर्य के जरिए ये दिशाबोध प्राप्त करती हैं।

तितलियां पराग संचलन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके लिए प्रकृति ने उसे एंटीना प्रदान किया है जिससे वह गंध का पता लगाती हैं। पुष्प पराग के अलावा वे सोडियम, खनिज-लवण, सड़े हुए फल, मरे हुए जानवर, कीचड़ आदि की ओर भी आकर्षित होती हैं।

तितलियां स्वयं भले ही रंग-बिरंगी और खूबसूरत हों लेकिन रंग पहचानने की क्षमता कुछ प्रजातियों की तितलियों में ही पाई जाती है। शेष सभी रंगाध होती हैं। वैसे उनकी दृष्टि काफी तेज होती है।

बहुत से लोग मानते हैं कि तितलियों की आयु महज एक दिन ही होती है लेकिन उनकी यह सोच सही नहीं है। वे एक साल तक भी जीवित रह सकती हैं। यह वहाँ के वृक्षों और पौधों पर निर्भर करता है।

बाल कहानी : डॉ. श्याम मनोहर

सबसे अच्छा

धारा नगरी के राजा भोज बड़े न्यायी और बुद्धिमान नरेश थे। उनके राज्य में सभी सुखी थे। उनके दरबार में अनेक गुणी और विद्वान थे। राजा भोज विद्वानों का बहुत आदर करते थे। वे हर वर्ष नये-नये गुणी लोगों को अपने दरबार में भर्ती करते थे।

एक बार किसी दूर-देश से भटकता हुआ एक विद्वान उनकी राजधानी में आ पहुँचा। वह निर्धन था। परन्तु पढ़ा-लिखा था। उसने सुना कि राजा भोज गुणियों का आदर करते हैं। इसलिये वह अपना भाग्य आजमाने भोज के दरबार में आ पहुँचा था।

उस समय राजा भोज अपने मंत्रियों के साथ सलाह-मशविरा कर रहे थे। राज्य कर्मचारियों ने विद्वान को राजा भोज के पास पहुँचा दिया। राजा ने विद्वान का आदर-सत्कार किया और आने का प्रयोजन पूछा।

विद्वान ने कहा– राजन्! मैं कौशल देश से आया हूँ। मेरा नाम अमरनाथ है। काशी में मैंने विद्या ग्रहण की है। सुना है आप गुणियों का आदर करते हैं, इसलिये मैं आपकी सेवा में आया हूँ।

राजा भोज ने कहा– पहले मैं आप से चार प्रश्न पूछूंगा। सही उत्तर मिलने पर आपको दरबार में रख लिया जाएगा।

राजा भोज ने पहला प्रश्न किया– दूध किसका अच्छा होता है?

विद्वान ने उत्तर दिया– दूध माँ का अच्छा होता है। जो हमें प्राणदान देता है।

राजा भोज ने दूसरा प्रश्न किया– पत्ता किसका अच्छा होता है?

विद्वान ने थोड़ा विचार कर कहा– पत्ता पान का अच्छा होता है जिसे राजा, अमीर, गरीब सब खाते हैं व एक-सा लाल रंग सबको उससे मिलता है।

राजा भोज ने तीसरा प्रश्न किया– फूल किसका अच्छा होता है?

विद्वान ने सोचकर कहा– महाराज! फूल कपास का अच्छा होता है जो हमें कपड़ा देता है, जिससे हम अपना शरीर ढकते हैं।

राजा ने अन्तिम प्रश्न किया– मिठास किसकी अच्छी होती है?

विद्वान ने उत्तर दिया– महाराज! मिठास वाणी की सबसे अच्छी होती है जो हर एक को अपने वश में रखने की ताकत रखती है। मीठी वाणी का असर तुरन्त होता है।

राजा भोज प्रश्नों के तर्क-युक्त सही उत्तर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए तथा खुश होकर उन्होंने विद्वान को काफी धन दिया और दरबार में रख लिया।

–जिस राज्य में विद्वानों का सम्मान रहता है वही राज्य व राजा सम्पन्न व ऐतिहासिक हो जाते हैं।

बोधकथा : कमल सौगानी

परोपकार की भावना

हरे-भरे जंगल के रास्ते के एक तरफ किसी गरीब व्यक्ति ने घास-फूस से अपनी छोटी-सी झोपड़ी बनाई। झोपड़ी इतनी छोटी थी कि उसमें केवल एक ही व्यक्ति रह सकता था। एक दिन बारिश शुरू हुई और मूसलाधार पानी गिरने लगा। झोपड़ी का मालिक अन्दर बैठा था। अचानक उसने देखा कि पानी से भीग जाने के कारण एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और झोपड़ी के द्वार से लगकर खड़ा हो गया। ठंड के कारण वह बुरी तरह से ठिठुर भी रहा था।

अन्दर बैठा हुआ व्यक्ति तुरन्त बाहर आया और बोला– ''भाई! तुरन्त अन्दर आ जाओ। अपने पानी से भीगे वस्त्र खोलकर मेरे सूखे कपड़े पहन लो और जब तक वर्षा रूक नहीं जाये यहीं बैठो। यद्यपि झोपड़ी छोटी है दो व्यक्तियों के पैर पसारकर बैठने तथा सोने के लायक नहीं है। किन्तु हम दोनों इसी में सिकुड़-सिकुड़कर बैठ जाएंगे और वर्षा का यह कठिन समय व्यतीत करेंगे...।''

प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा ही होना चाहिये। अगर उस व्यक्ति के हृदय में सहानुभूति, करुणा और परोपकार की भावना न होती तो स्वयं स्थान की तंगी से कष्ट उठाकर आगन्तुक को स्थान न देता। कह देता– 'जगह नहीं है।' परउपकारी व्यक्ति ऐसा नहीं करता। दीन-दुखी की सहायता करना, अभावग्रस्त के अभाव की पूर्ति करना वह अपना कर्त्तव्य समझता है, और वह पुण्य का भागी बनता है...।

लेख (सेहत) : परिधि जैन

गुणों की खान आंवला

आंवला को हमारे पूर्वजों ने 'धात्रीफल' का नाम दिया है अर्थात् जो मानव का धाय की तरह पालन-पोषण करे। पौराणिक कथा इस प्रकार है कि आदिकाल में जब प्रलय का उत्पात हुआ, सृष्टि का अंत चरमसीमा को पार कर गया, तब ब्रह्माजी ब्रह्म के ध्यान में लीन हो गए और उनकी आंखों में संवेदना झलकी। उन्हीं दिव्य बूंदों के फलस्वरुप आंवला वृक्ष का जन्म हुआ। उसी समय आकाश से एक तेजस्वी वाणी हुई, जो पूरे आभामंडल में गूंज उठी– 'हे देवताओं, आंवले का सृजन सभी फलों में श्रेष्ठ है। इसका वृक्ष, फल, पत्ते, डालियां भगवान विष्णु को प्रिय है। यह सर्वरोग हर्ता, पाप निवारण कर्ता, सर्वइच्छाओं को साधने वाला है।'

आंवले का प्रयोग भोजन में करने से जहाँ हमारा स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। वहीं यह हमें अनेक बीमारियों से बचाता भी है क्योंकि आंवले में विटामिन 'सी' अधिक मात्रा में होता है। कुछ व्यक्ति तो आंवला कच्चा ही खा लेते हैं। इसका स्वाद कसैला होता है। कच्चे आंवले की चटनी स्वादिष्ट बनती है। औषधि के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता है। बालों के लिए आंवला वरदान है। इसके नियमित प्रयोग से बाल काले, घने व लम्बे होते हैं। आंवले की तासीर ठंडी होती है। इसलिए सर्दियों में सुबह धूप के सेवन के साथ इसका मुरब्बा खाने से विटामिन 'सी' और विटामिन 'डी' दोनो ही शरीर को प्राप्त हो जाते हैं।

शीत ऋतु और शरद ऋतु को हमारे घरों की किवदंतियों और चिकित्सकीय मतों से 'हेल्दी सीजन' (स्वास्थ्यवर्द्धक मौसम) कहा जाता है। इस मौसम में शकरकंद, अमरुद, मूंगफली, अदरक, हल्दी, टमाटर, गाजर आदि प्रकृति के अमूल्य उपहार के रूप में हमें प्राप्त होते हैं। सभी चीजें अपनी उत्तमता के लिए स्वास्थ्य के लिए वरदान हैं। इन सभी फलों में औषधीय गुणों से ओतप्रोत फल आंवला है, जो हमें सिर्फ शीतऋतु में ही प्राप्त है। विटामिन 'सी' से भरपूर यह फल सुखाने, गर्म करने, पकाने या चूर्ण रूप में सुरक्षित रखने पर भी अपने विटामिनों का मूल स्वरूप जीवंत रखता है। इसे आप अचार, चटनी या मुरब्बा अथवा अन्य किसी रूप में सुरक्षित करके, किसी भी मौसम में उपयोग कर सकते हैं। शीतऋतु में सुरक्षित आंवले से बने पदार्थों का गर्मी में सेवन अमृत के समान होता है। यह नेत्र ज्योति के लिए बढ़िया है ही, इसी के साथ हृदय धमनियों के अवरोध को दूर कर रक्त प्रवाह को नियमित रखने, शरीर के अन्य अवयवों की गर्मी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही इसकी सर्वकालिक उपयोगिता है।

आंवले को हम वैज्ञानिक कसौटी पर विश्लेषित करें तो पाएंगे कि प्रति 100 ग्राम आंवले में 600 मिलीग्राम विटामिन 'सी' रहता है। इसके अलावा प्रोटीन, वसा, रेशा, कैल्शियम, खनिज लवण, फास्फोरस, लोहा अन्य फलों की तुलना में आंवला में अधिक रहता है। एक आंवले में 2 संतरे या पांच केलों के बराबर विटामिन 'सी' रहता है। रक्त विकार दूर करने में आंवला जैसा कोई दूसरा फल नहीं होता है। अपनी ठंडी तासीर के कारण यह रक्त की गर्मी व चित्त के दोषों को तो दूर करता ही है, मस्तिष्क व हृदय की कोशिकाओं को भी दुरुस्त रखता है। भोजन से पहले या भोजन के बाद किसी भी रूप में आंवले का सेवन लाभदायक होता है। यह पायरिया रोग को रोकने में सक्षम है। इसके बारीक सूखे चूर्ण को मंजन के रूप में उपयोग में लाने से दांत मजबूत एवं चमकदार तो

होंगे ही, साथ ही मुँह की बदबू से भी आपको छुटकारा मिल जाएगा।

आंवले को औषधीय रूप में प्रयोग करने के कुछ उपाय इस प्रकार हैं–

★ आंवला चूर्ण एक चम्मच रात को सोते समय पानी के साथ लेने से या शहद के साथ चाटने से कब्ज की शिकायत दूर होती है।

★ आंवले का नियमित प्रयोग बवासीर और कृमि भी नष्ट करता है।

आंवले का तेल : आंवले को कुचलकर रस निचोड़ लें। रस एवं नारियल तेल समान मात्रा में मिलाकर धीमी आंच पर पकाएं। जब पानी की मात्रा जल जाए तो नीचे उतारकर ठंडा करके छान लें। इसे बालों में लगाएं, बाल स्वस्थ रहेंगे।

आंवला बटी : आंवले को उबालकर गूदे को सीलबट्टे पर महीन पीस लें। सेंधा नमक, काला नमक, सौंठ पाउडर अंदाज व स्वादानुसार डालकर मिश्रण बना लें। छोटी-छोटी गोलियां बनाकर सुखा लें। चटपटी आंवला बटी तैयार है।

आंवले का अचार : आंवले को उबाल लें। कलियां निकालकर पानी सुखा दें। एक बर्तन में अंदाज से तेल गर्म करें। लालमिर्च, हल्दी, नमक, मैथी दरदरी पिसी हुई, सौंठ पाउडर, राई, सौंफ व हींग डालकर मसाला बना लें। इसमें आंवले की कलियां मिलाकर मर्तबान में भर दें। स्वादिष्ट चटपटा अचार तैयार है।

आंवले का मुरब्बा : आंवले को गोदकर पानी में जरा-सा चूना डालकर चूने के पानी में एक दिन एक रात डालकर रखें। दो दिन के बाद इसको साफ पानी से अच्छी तरह धोएं और पानी बदलकर फिर से साफ पानी में डालकर रख दें। 5-7 बार 2-2 घंटे के अन्तर पर धोने से इसके अन्दर से चूने के पानी को पूरी तरह साफ कर सकते हैं। बाद में आंवले को कुछ सख्त रहने तक पकाएं। इसको पानी से बाहर निकालकर आंवले का पानी अच्छी तरह सुखाएं। शक्कर की

चाशनी एक तार की बनाने के बाद चाशनी में डालें और चाशनी फिर से गाढ़ी होने तक आंवलों को करछी से चलाते हुए पकाएं। ठंडा होने पर मर्तबान में भर दें। स्वादिष्ट आंवले का मुरब्बा तैयार है। इसे चांदी के वर्क से सजाकर खाइए।

आंवले की सुपारी : आंवला उबालकर उसकी कलियां निकालकर या कच्चे आंवले को कसकर उसमें काला नमक मिलाकर सुखा लें। आंवले की सुपारी तैयारी हो जाएगी। इसे किसी भी वक्त खाने से आपके मुँह का जायका भी ठीक रहेगा और उदर संबंधी रोग से भी छुटकारा मिलेगा।

★ आंवले की चटनी बनाकर खाने से विभिन्न रोग दूर होते हैं।

★ आंवला पाउडर और मुलहठी खाली पेट लेने से खांसी, बलगम से आराम मिलता है।

★ आंवला पाउडर व धनिया पाउडर समान मात्रा में शहद के साथ लेने से गर्मी से सिरदर्द व चक्कर आने से छुटकारा मिलेगा।

★ बाल धोने के लिए लोहे की कड़ाही में आंवला पाउडर, शिकाकाई पाउडर, रीठा पाउडर तीनों भिगो दें। सुबह उससे बाल धोएं। बालों का झड़ना कम होगा और बाल काले व लम्बे होंगे।

★ सफेद बालों को काला करने के लिए रीठा पाउडर समान मात्रा में रात को लोहे की कड़ाही में भिगो दें। सुबह चायपत्ती का पानी उबालकर उसमें मेंहदी मिलाकर कड़ाही वाले मिश्रण में मिला दें। ब्रश से इस पेस्ट को बालों में लगाएं। 4-5 घंटे तक बालों में लगा रहने के बाद शैम्पू से बाल धोएं। सप्ताह में 2 बार उपरोक्त मिश्रण को बालों में लगाएं। धीरे-धीरे बालों की सफेदी दूर होगी। बाल धोने के बाद आंवले का तेल बालों में लगाएं।

यदि हम आंवले का प्रतिदिन प्रयोग करें तो हम स्वस्थ, सुन्दर बने रहेंगे। आंवले का प्रतिदिन प्रयोग सोने में सुहागा का काम करता है।

कहानी : रवजीभाई काचा

बातुनी मेढकी और नीली मछली

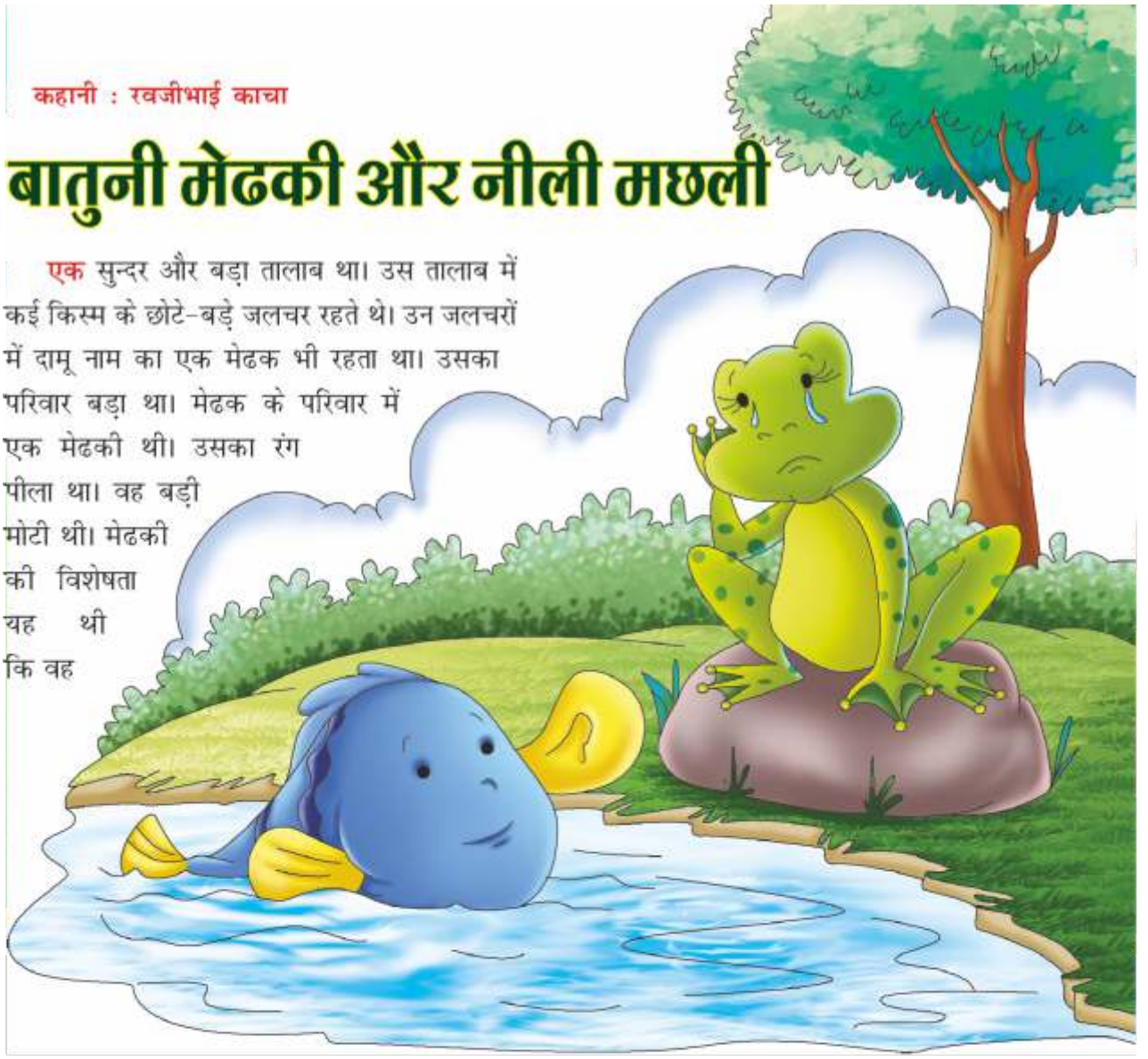

एक सुन्दर और बड़ा तालाब था। उस तालाब में कई किस्म के छोटे-बड़े जलचर रहते थे। उन जलचरों में दामू नाम का एक मेढक भी रहता था। उसका परिवार बड़ा था। मेढक के परिवार में एक मेढकी थी। उसका रंग पीला था। वह बड़ी मोटी थी। मेढकी की विशेषता यह थी कि वह चुप बैठने वालों में से नहीं थी। दिन-रात बोलती रहती थी। कोई उसे टोकता तो कहती, 'मैं ज्यादा बोलती नहीं हूँ। मैं तो गा रही हूँ।' लेकिन उसका ड्रा...ऊं... ड्रा...ऊं... का संगीत किसी को अच्छा नहीं लगता था। सभी उससे त्रस्त थे। मेढकी के माता-पिता उसे समझाते थे, पर वह मानती नहीं थी। वह छोटी थी तब तो ठीक था लेकिन अब तो वह बड़ी हो गई थी। वह किसी की नहीं सुनती थी। कोई समझाता तो वह उसे आड़ों हाथ लेती थी। सब थक गये उसे कहते-कहते। सभी उसे बातुनी कहकर बुलाते थे। उसका नाम ही ड्राऊं मेढकी पड़ गया था। उसकी माँ को उसकी चिंता रहती थी। लेकिन वो भी करे तो क्या करे।

एक दिन बातुनी मेढकी तालाब के किनारे चुपचाप अकेली बैठी थी। वह बैठी-बैठी रो भी रही थी। उसी समय वहाँ से एक नीली मछली जा रही थी। नीली मछली ने मेढकी को देखा। उसे आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगी कि यह क्यों रो रही है? मछली को दया आ गई। वह दयाभाव से उसके पास गई और पूछा– अरे ओ मेढकी बहन! तुम क्यों रो रही हो?

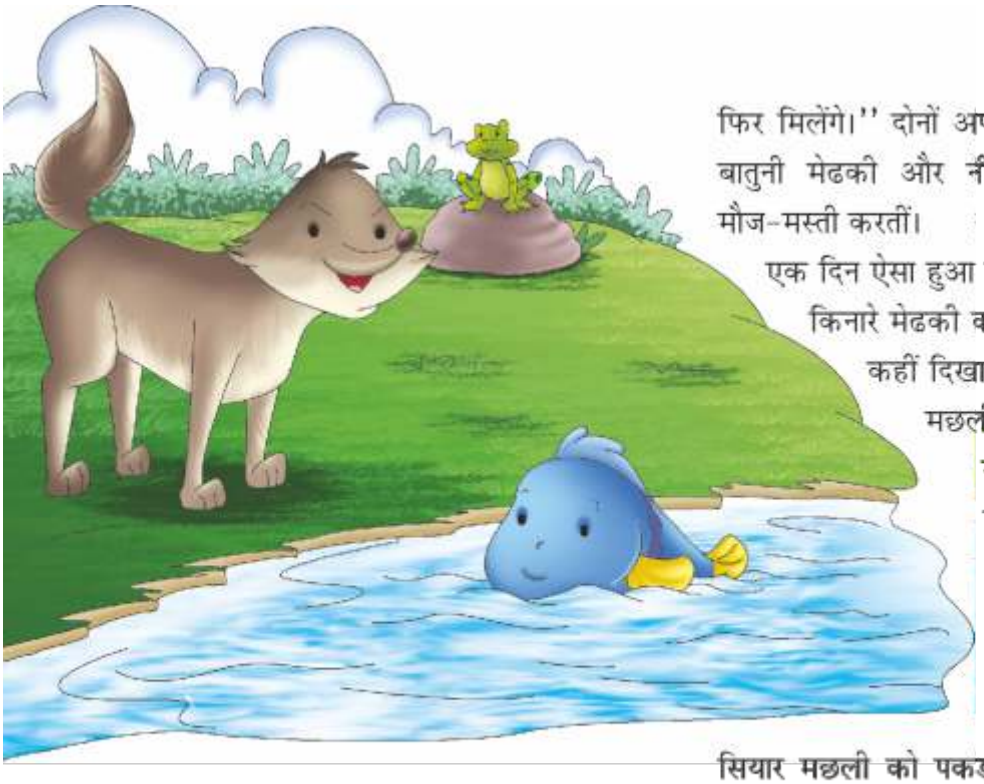

अपने आंसू पोंछती हुई सिसकियां भरती हुई मेढकी बोली, "मैं क्या करूं मछली बहन! मैं बहुत दु:खी हूँ। तुम अपना काम करो।" कहकर वह फिर से रोने लगी।

उसे अपनी बांहों में लेकर मछली बोली, "रो मत बहन! कुछ कहो, बोलो हुआ क्या है? बताओ, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ?"

–तू क्या मदद करोगी? यहाँ सब मेरी खिल्ली उड़ाते हैं। मुझे बातुनी कहकर चिढ़ाते हैं। मेरे साथ कोई बोलता भी नहीं है। बोलो मैं क्या करूं?

नीली मछली हँसती हुई मेढकी को सीने से लगाती हुई बोली– इतनी-सी बात पर तू नाराज होकर रो रही हो। मत रो बहन। आज से मैं तुम्हारी दोस्त हूँ। हम दोनों साथ-साथ रहेंगे, खेलेंगे और मजा करेंगे। खुश! अब तो हँस दो बहन।

दोनों प्रसन्न होकर हँसने लगीं और खेलने लगीं। बहुत देर तक तैरने की स्पर्धा की। अंधेरा होने लगा। नीली मछली बोली, "बहन, अब मुझे घर जाना है। मेरी मम्मी राह देखती होगी। तू भी घर जा। कल फिर मिलेंगे।" दोनों अपने-अपने घर गईं। फिर तो बातुनी मेढकी और नीली मछली रोज मिलतीं, मौज-मस्ती करतीं।

एक दिन ऐसा हुआ कि नीली मछली तालाब के किनारे मेढकी की राह देख रही थी। मेढकी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। अचानक मछली के पीछे से एक सियार आ गया। उसने मछली को देखा। उसके मुँह में पानी आ गया। मछली को देखकर वह खुश हो गया। वह आहिस्ता-आहिस्ता मछली की ओर बढ़ने लगा। सियार मछली को पकड़ने ही वाला था कि ठीक उसी समय आती हुई मेढकी ने उसे देख लिया। उसने सियार की मंशा जान ली। मछली को बताने और बुलाने का समय नहीं था। उसने बड़े भरे गले और जोर से मोटी आवाज निकाली– ड्रा...ऊं...।

अचानक मोटी आवाज सुनकर सियार घबरा गया। वह वापस मुड़ गया। उस समय का फायदा उठाते हुए मेढकी अपनी मित्र को पानी के अन्दर धकेल कर ले गई।

–क्या बात है, तुमने मुझे क्यों धकेला?– मछली ने घबराकर पूछा।

मेढकी ने सियार की बात बताई। सुनकर मछली मेढकी को गले लगाकर बोली– शुक्रिया मेरी अच्छी दोस्त। तूने मुझे बचाया है।

इसमें शुक्रिया की क्या बात है। दोस्ती में शुक्रिया नहीं कहते। एक-दूसरे की मदद करना हमारा फर्ज है। हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिये।

यह दृश्य कई मछलियों और मेढकों ने देखा। उन्होंने खुश होकर दोनों का अभिनंदन किया।

प्रेरक-प्रसंग : जगदीश कौशिक

भावना से कर्तव्य ऊँचा

भारतवर्ष के प्रथम गृहमंत्री तथा उपप्रधानमंत्री थे सरदार बल्लभभाई पटेल। वह पेशे से वकील थे। एक बार पटेल अपने एक मुकद्दमे में बहस कर रहे थे। मुकद्दमा बहुत संगीन था। थोड़ी-सी भी असावधानी यदि बहस करने में हो जाती तो वह केस हार सकते थे। इसलिये वह बड़ी सावधानी से दूसरे पक्ष के वकील की दलीलों को काट रहे थे। मुकद्दमे को जीतना वह अपना कर्तव्य समझ रहे थे।

अचानक कोर्ट में ही डाकिया आया और उन्हें तार का लिफाफा देकर चला गया। पटेल जी ने बहस करते-करते ही तार के शब्दों को पढ़ा और लिफाफा जेब में डाल लिया। बहस समाप्त हो गई। वह बाहर आये तो साथी वकीलों ने तार के बारे में पूछा तो पटेल जी ने कुछ उदास होकर कहा– मेरी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया है। तार में यही सूचना दी गई है।

उपस्थित सभी वकील हैरान रह गये उनके हौसले को देखकर। कुछ ने कहा– आप अगली पेशी ले लेते?

इतना बड़ा हादसा और आप आराम से ऐसे बहस करते रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो।

सरदार बल्लभभाई ने कहा– मित्रों! आप ठीक कह रहे हैं। हादसा कोई मामूली नहीं जीवन का साथी हमेशा के लिये साथ छोड़ गया। मुझे तारीख ले लेनी चाहिए थी परन्तु तनिक सोचो उस बेचारे के केस का क्या बनता जिससे मैंने फीस ले रखी है। हो सकता था बहस अधूरी रहने पर उसे हानि होती।

मरने वाली ने तो अब वापस आना नहीं। मैं भावना में बहकर अपने कर्तव्य से क्यों गिरता? मेरी नजरों में कर्तव्य महान है, भावना तो अस्थायी होती है। मैं जीवन में कर्तव्य को महत्व देता हूँ, भावना को नहीं।

सभी वकील उनकी बात सुनकर हैरान रह गये।

–वास्तविकता भी यही है: भावना में बह जाने वाले लोग जीवन की सफलताओं से हाथ धो बैठते हैं।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मैडम जी, लकड़ी के पहिये का आविष्कार कब हुआ था?
लकड़ी के पहिये का आविष्कार सबसे पहले मेसोपोटामिया (पश्चिमी एशिया) में हुआ था। सुमेरियन सभ्यता काल में ईसा से 3500 वर्ष पहले इस पहिये को लकड़ी के कई तख्तों को जोड़कर बनाया था।
मैडम जी, पहिये का विकास कैसे हुआ? कृपया बतायें।
लकड़ी के पहिये का विकास समय के साथ कई चरणों में हुआ।
जी, मैडम!
प्राचीन काल में भारी वस्तुओं को आसानी से ले जाया जा सके इसके लिए भारी वस्तुओं के नीचे रोलर्स (लकड़ी के गोल लट्ठे) रखे जाते थे।

टीचर जी स्लेज तो बर्फीले इलाकों में ही चलती है न!
उन लोगों ने वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए स्लेज का आविष्कार किया।
टीचर जी, पहिये की खोज तो काफी मज़ेदार है।
उस स्लेज को रोलर के ऊपर रखकर चलाने की कोशिश की गई।
उसके बाद स्लेज के नीचे लगे रोलर्स का उपयोग पहिये के रूप में होने लगा। अब रोलर्स पर गहरे खांचे बनाकर स्लेज को काफी दूरी तक ले जाया जाने लगा।

इस प्रकार रोलर्स को पहियों का आकार दिया गया।

फिर लकड़ी के पहिये लगाकर सबसे पहली लकड़ी की गाड़ी बनी थी न!

2000 ई. पू. के आसपास ये पहिये रथों और बैलगाड़ियों पर लगाये गये। तब से इन पहियों के विकास में और तेजी आई। जिसका परिणाम हम आज देख रहे हैं।

टीचर जी, ट्रक, बसें, और रेलगाड़ियां भी तो पहियों से ही चलती हैं।

देखा बच्चों! पहिये का आविष्कार आज हमारे कितना काम आ रहा है।

जी, टीचर जी!

बच्चों! मानव सभ्यता के विकास में पहिये का बहुत बड़ा योगदान है।

संकलन : राजेश कुमार (लखनऊ)

कभी न भूलो

★ फूलों की सुगन्ध केवल वायु की दिशा में फैलती है लेकिन व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

★ व्यक्ति कर्म से महान होता है, जन्म से नहीं।

★ मूर्ख व्यक्ति के लिए किताबें उतनी ही उपयोगी हैं जितना कि एक अंधे व्यक्ति के लिए आईना।

★ भूत (बीता हुआ समय) के बारे में पछतावा न करें, भविष्य के बारे में चिंता न करें, विवेकवान व्यक्ति हमेशा वर्तमान में जीते हैं।

– चाणक्य

★ संतुष्ट रहने वाले के लिए सदा सभी दिशायें सुखदायी हैं जैसे जूता पहने वाले को कंकड़ और कांटे आदि से दुख नहीं होता।

– भागवद्गीता

★ कपटी एक न एक दिन पतन की खाई में गिरता है। – महात्मा विदुर

★ आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है।

★ मनुष्य के संकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित हो जाते हैं। – एमर्सन

★ यह सही है पत्थर आखिरी चोट से टूटता है लेकिन पहले की भी चोटें बेकार नहीं जाती।

★ प्रतिभा जाति पर निर्भर नहीं है जो परिश्रमी है वही प्राप्त करता है। – शाह अब्दुल लतीफ

★ मनुष्य के मन में सन्तोष होना स्वर्ग की प्राप्ति से भी बढ़कर है। सन्तोष सबसे बड़ा सुख है उससे बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है।

– वेदव्यास

★ भलाई से बढ़कर जीवन और बुराई से बढ़कर मृत्यु नहीं है। – आदिभट्ल नारायण दासु

★ दिमाग में भरे हुए ज्ञान का जितना अंश काम मे लाया जाए, उतने का ही कुछ मूल्य है बाकी सब व्यर्थ बोझ है। – महात्मा गाँधी

★ बुद्धिमानों की झिड़कियां सुनना भला है, लेकिन मूर्खों से गीत सुनना अच्छा नहीं। – इन्जील

★ जो हर किसी की प्रशंसा करता है, वह किसी की भी प्रशंसा नहीं करता। – जॉनसन

★ दयालु लोगों का शरीर परोपकार से सुशोभित होता है, चंदन से नहीं। – भतृहरि

★ वृक्ष अपने सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप सहता है, किन्तु अपने आश्रितों की गर्मी अपनी छाया द्वारा दूर करता है। – कालीदास

★ जीतता वह है जिसमें शौर्य होता है, धैर्य होता है, साहस होता है, सत्य होता है और धर्म होता है।

– हजारीप्रसाद द्विवेदी

★ जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं। – प्रेमचन्द

★ सहानुभूति एक ऐसी विश्वव्यापी भाषा है, जिसे सभी प्राणी समझते हैं। – जेम्स एलेन

★ गुस्सा सदैव मूर्खता से शुरू होता है तथा पछतावे पर खत्म होता है। – अरस्तु

★ समृद्धियां पराक्रमी मनुष्य के साथ रहती हैं, अनुत्साही मनुष्य के साथ नहीं। – भारवि

★ अहंकार ज्ञान का विरोधी है।

★ सन्तोष ही श्रेष्ठ सुख है। – अज्ञात

दो कविताएं : हरजीत निषाद

तभी बचेगी अपनी धरती

प्रकृति प्रकोप दिखाती है,
तकनीक काम न आती है।
कमजोर हुए सब इंतजाम,
प्राकृतिक आपदा आती है।।

बिगड़ गया कुदरत का चक्र,
तपता सूरज दृष्टि वक्र।
धरती नित हो रही है गरम,
टूट रहा जीवन का चक्र।।

पानी बरसा खूब कहीं,
कहीं पे जल की बूँद नहीं।
जल के स्रोत हैं सूख रहे,
पर मानव को फिक्र नहीं।।

खतरे से सतर्क हो जाएँ,
पेड़ व पानी सभी बचाएं।
तभी बचेगी अपनी धरती,
मिलजुल पर्यावरण बचाएं।।

धरती का आँगन

धरती का आँगन,
लगता मनभावन।
झरने झील नदियां,
पर्वत पेड़ कलियां।।

गन्ना गेहूँ शहद,
पीपल बेर बरगद।
धरती है दयालु,
मिट्टी दोमट बालू।।

धरती देती सम्बल,
सोना चांदी पीतल।
जल में है हलचल,
गंगा यमुना चम्बल।।

गाय भैंस ढोर,
बन में नाचे मोर।
बुलबुल का चहकना,
गोरैया का फुदकना।।

सुन्दर संगमरमर,
एक से एक बढ़कर।
धरती देती सब कुछ,
लेती न कभी कुछ।।

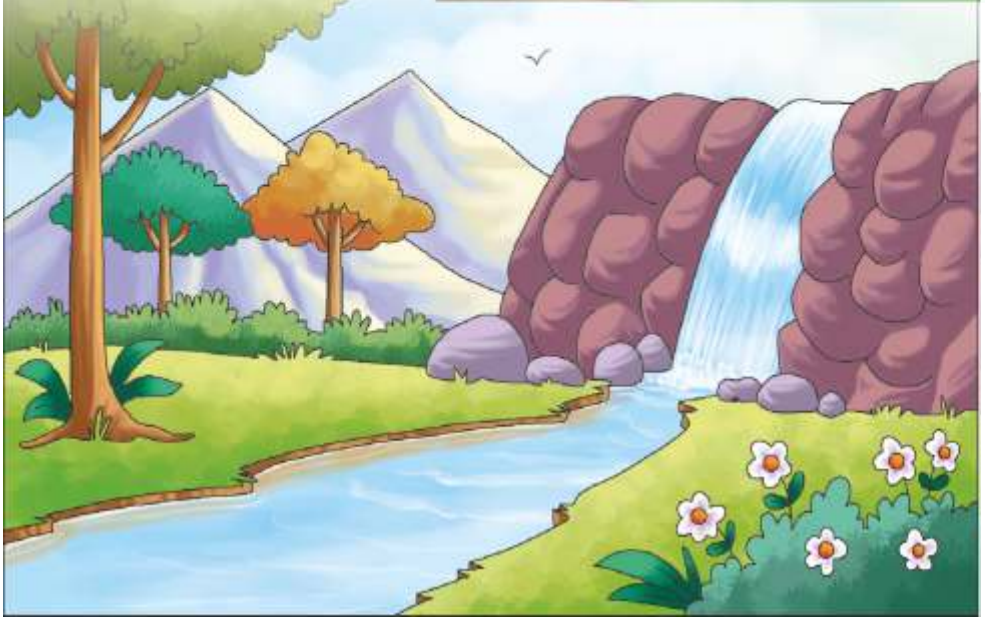

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

हिमालय का शर्मीला प्राणी : याक

याक मध्य एशिया के ऊँचे, बर्फीले, पर्वतीय स्थलों पर पाया जाने वाला एक शर्मीला पशु है। इसका आकार भैंसे से कुछ बड़ा होता है तथा इसके कंधों, जांघों और पूंछ पर लम्बे, घने बाल होते हैं। याक के सिर पर विशेष प्रकार से मुड़े लम्बे सींग होते हैं। इसके बाल और सींग इसकी विशेष पहचान हैं। याक रूस, चीन, मंगोलिया, तिब्बत और भारत में बहुतायत से पाया जाता है। भारत में यह गढ़वाल की पहाड़ियों, जम्मू-कश्मीर की लद्दाख घाटी तथा हिमाचल प्रदेश की पंजी, लाहुल एवं स्पीति घाटियों में देखने को मिलता है।

याक एक पर्वतीय प्राणी है। यह मैदानी भागों में नहीं रह सकता। सामान्यतया याक की दो प्रजातियां देखने को मिलती हैं– जंगली याक और पालतू याक। जंगली याक अपेक्षाकृत शक्तिशाली, भारी-भरकम और बड़े आकार का होता है। नर याक के शरीर का भार सौ से लेकर पांच सौ किलोग्राम तक तथा मादा याक के शरीर का भार डेढ़ सौ से लेकर साढ़े तीन सौ किलोग्राम तक होता हैं इसका सिर झुका हुआ, कंधे ऊँचे, कमर सीधी तथा पैर छोटे और मजबूत होते हैं। जंगली याक के दोनों सींगों के मध्य बालों का एक गुच्छा होता है और गर्दन पर लम्बे अयाल होते हैं। इसकी कंधों तक की ऊँचाई वाले भागों में पाया जाता है। रूस और मंगोलिया के जंगली याक पन्द्रह हजार फुट की ऊँचाई तक भी देखे गये हैं। ये सामान्यतया दस-पन्द्रह से लेकर दो सौ तक के झुंड में रहते हैं और -40 डिग्री सेल्सियस तापक्रम में भी कोई कठिनाई अनुभव नहीं करते।

पालतू याक एक सीधा-सादा शर्मीला प्राणी है। यह जंगली याक से छोटा होता है। इसके शरीर पर कम घने बाल होते हैं। इसका रंग सफेद मटमैला या चितकबरा होता है। पालतू याक एक दुधारू पशु है। याक के गोबर को ईंधन की तरह प्रयोग करते हैं। पालतू याक कृषि कार्यों, माल ढोने एवं सवारी के काम भी आता है। यह ऊँचे-नीचे खतरनाक पर्वतीय मार्गों पर बड़ी सरलता से चढ़ जाता है, अतः सवारी एवं बोझ ढोने के लिए यह टट्टू और खच्चर से भी अधिक उपयोगी है। पालतू याक के दूध से दही, पनीर, मक्खन, घी तथा विभिन्न प्रकार की मिठाइयां बनती हैं। इसके बालों से रस्सियां तथा कम्बल बनाये जाते हैं और इसकी खाल थैले से लेकर तम्बू तक बनाने में काम आती है। बर्फीले पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग सर्दियों में इसकी खाल का वस्त्रों के समान भी उपयोग करते हैं।

विश्व में सर्वाधिक याक तिब्बत में पाये जाते हैं। यहाँ इनकी संकर प्रजातियों का भी विकास किया गया है। याक पिता और गाय माता से उत्पन्न प्रजाति को 'जुबू' एवं याक माता और सांड पिता से उत्पन्न प्रजाति को 'गार्जो' के नाम से जाना जाता है। तिब्बत में याक की एक ऐसी प्रजाति भी पायी जाती है, जिसके सींग नहीं होते। इसे 'जुम' कहते हैं। एक मादा याक से एक दिन में दो से लेकर पांच किलो तक दूध प्राप्त होता है, जो पौष्टिकता में गाय या भैंस के दूध से कम नहीं होता।

याक बर्फीले पहाड़ों पर उगने वाली घास-फूस, झाड़ियां या अन्य वनस्पतियां खाता है और पिघली हुई बर्फ का पानी पीता है। कुछ पशु वैज्ञानिकों का

मत है कि यह नमकीन मिट्टी और बर्फ भी खाता है। याक को गर्मियों में तो भरपूर भोजन मिल जाता है, किन्तु सर्दी के दिनों में जब घास-फूस तथा वनस्पतियां बर्फ से ढक जाती हैं तो इसे भोजन प्राप्त करने में काफी कठिनाई होती है। सामान्यतया यह बर्फ खोदकर अपना भोजन प्राप्त कर लेता है, किन्तु अधिक बर्फ होने पर इसे कभी-कभी कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता है।

तिब्बत, रूस, चीन, भारत, मंगोलिया आदि सभी देशों में याकों की कुल संख्या वर्तमान में लगभग दस लाख हैं, किन्तु इनके संरक्षण की उचित व्यवस्था न होने के कारण इनकी संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। याकों की संख्या यदि इसी प्रकार गिरती रही तो

शीघ्र ही इस उपयोगी पशु को दुर्लभ या लुप्तप्राय पशुओं की श्रेणी में सम्मिलित करना पड़ेगा।

कार्यदक्षता

प्रेरक-प्रसंग : जगतार 'चमन'

यूनान देश के किसी गाँव में एक लड़का रहता था। वह जंगल से लकड़ियां काटकर गुजारा करता था। वह दिनभर जंगल में लकड़ियां काटता और शाम को पास के शहर के बाजार में उन्हें बेच देता था। एक दिन एक विद्वान और गुणी व्यक्ति बाजार से जा रहा था। उसकी नजर बालक के गट्ठर पर पड़ी, जो बहुत ही कलात्मक ढंग से बंधा था। उसने उस लड़के से पूछा– क्या यह गट्ठर तुमने खुद बांधा है?

लड़के ने जवाब दिया– जी हाँ, मैं दिनभर लकड़ी काटता हूँ, स्वयं गट्ठर बांधता हूँ और रोज शाम को बाजार में बेच देता हूँ।

उस व्यक्ति ने कहा– क्या तुम इसे खोलकर फिर से इसी प्रकार दोबारा बांध सकते हो?

लड़के ने गट्ठर खोला और बड़े ही सुन्दर तरीके से उसे फिर बांध दिया। यह कार्य वह बड़े ध्यान, लगन और फुर्ती के साथ कर रहा था।

लड़के की एकाग्रता, लगन और कलात्मक ढंग से काम करने के तरीके से उस व्यक्ति को काफी प्रभावित किया। उसे उस बच्चे में काफी संभावना नजर आई। उसने पूछा– क्या तुम मेरे साथ चलोगे? मैं तुम्हें अपने साथ रखूंगा, शिक्षा दिलाऊंगा। तुम्हारा सारा खर्चा मैं उठाऊंगा।

बालक ने सोच-विचार कर अपनी स्वीकृति दे दी और उसके साथ चला गया। उस व्यक्ति ने बालक के रहने और उसकी शिक्षा का प्रबंध किया। वह स्वयं भी उसे पढ़ाता था और नई-नई बातें सिखाता था। थोड़े ही समय में उस बालक ने उच्च शिक्षा हासिल की और काफी कुछ ज्ञान अर्जित कर लिया।

बड़ा होने पर यह बालक यूनान के महान दार्शनिक पाइथागोरस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जिस व्यक्ति ने उसे अपने यहाँ रखा था, वह था यूनान का विख्यात तत्वज्ञानी डेमोक्रीटस।

कहानी : घनश्याम देसाई

चार चूहे

एक पहाड़ था। उस पर तरह-तरह के पेड़ उगे थे। पेड़ों के बीच एक गुफा थी। गुफा के ऊपर एक झरना बहता था। पानी उसका अच्छा था। पत्थरों से निकला साफ पानी बहुत ही ठण्डा था।

गुफा में चार चूहे रहते थे। इधर-उधर घूमते रहते थे। खोद-खोदकर जमीन में घर बनाते। गुफा ही उनका घर था। पेड़ों पर से पड़े फल खाते और ऊपर जाकर झरने का पानी पीते। इधर-उधर दौड़ा करते और मजे से रहते।

एक दिन एक बाघ आया। उसने गुफा देखी। आस-पास के पेड़ देखे। गुफा से थोड़ी दूर झरना देखा। उसे गुफा बहुत ही अच्छी लगी। वह वहाँ रहने लगा।

चूहों का घर बाघ ने ले लिया। अतः चूहे घरहीन हो गए। उनकी रात-दिन की दौड़ा-दौड़ी बंद हो गई। बाघ उनके जहाँ-तहाँ आड़े आने लगा।

अतः उन्होंने बाघ से कहा– हम इस गुफा में कई दिनों से रह रहे हैं। यह हमारा घर है। यदि आप दूसरे घर में जाएं तो ठीक रहेगा। इससे हम अपने घर में आराम से रह सकेंगे।

पर बाघ क्यों माने? उसने तो चूहों की ओर देखा तक नहीं। गुफा में रहना चालू रखा।

गुफा में बाघ रहता था। चूहे उसमें आते भी कैसे? बेचारे चूहे गुफा के बाहर निकल गए। वे सोचने लगे कि

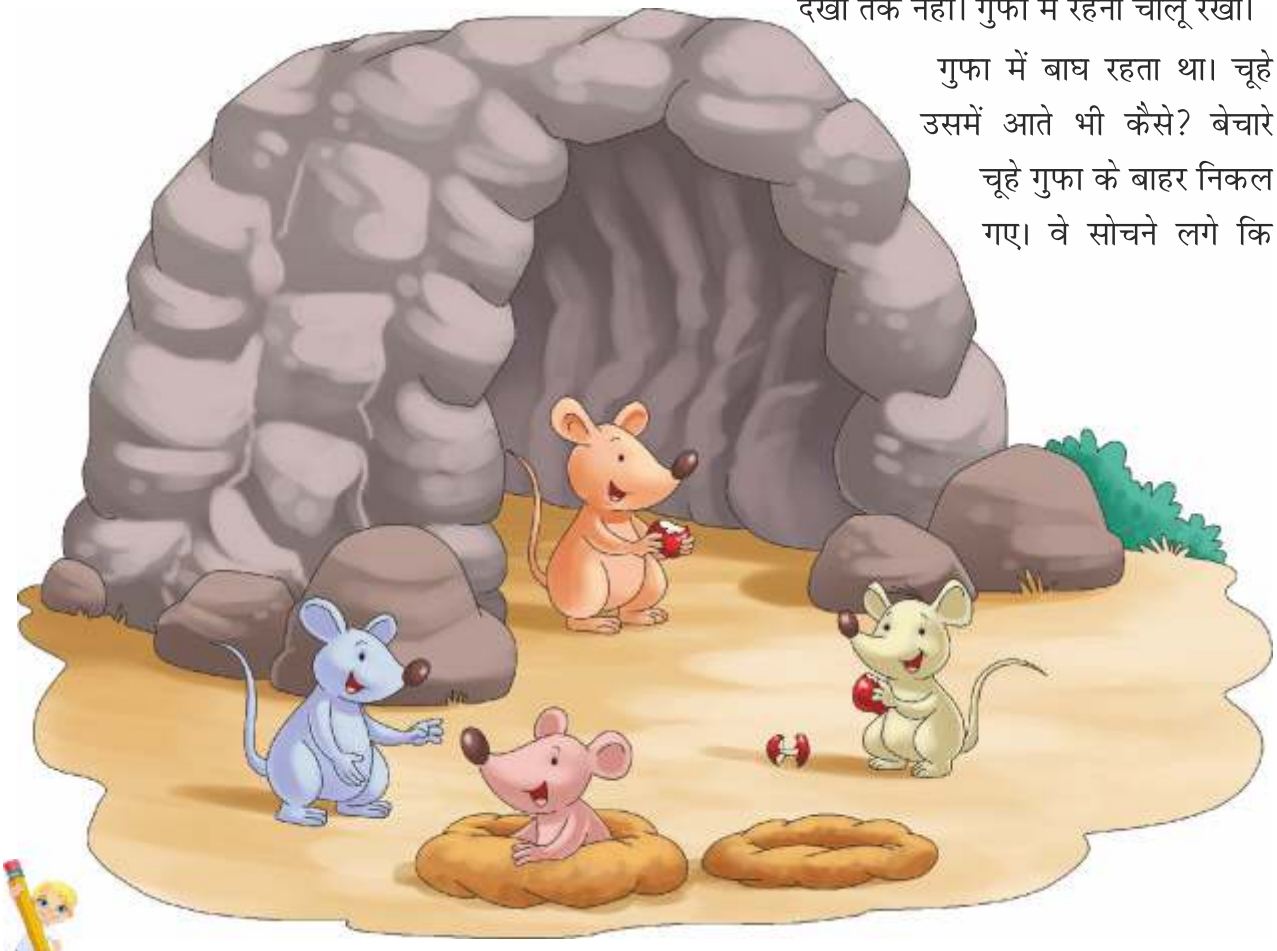

बाघ ने हमारा घर ले लिया है। अब इसे बाहर कैसे निकाले? ताकत में बाघ हमसे बहुत ज्यादा ताकतवर है।

चूहे रोज सोचते पर उपाय नहीं निकला। आखिर एक चूहे को अच्छा विचार आया। सब चूहे उससे सहमत हो गए।

उसने दूसरे चूहों से कहा– गुफा के ऊपर एक झरना है। उसका पानी ठण्डा है। हम गुफा को इस तरह से खोदते रहें कि गुफा से एक सुराख निकाले। फिर जैसे ही झरने का ठंडा पानी गुफा में जायेगा तो बाघ ठण्ड में बाहर हो जायेगा।

चूहे तुरन्त ही खोदने में लग गए। गुफा के ऊपर उन्होंने एक सुराख करने की शुरुआत की। वे कुछ दिनों में पहुँच गए झरने तक। ठण्डा पानी सुराख से गुफा में भरने लगा।

पानी पहले बाघ के पांव तक, फिर घुटनों तक आया। बाघ ने देखा कि पानी बहुत ठंडा था। पानी से बाघ थर-थर कांपने लगा।

पानी गुफा में अधिकाधिक बढ़ रहा था। बाघ ने छलांग मारी और जंगल की ओर भाग गया।

फिर चूहे हँसते-हँसते झरने तक गए। वहाँ उन्होंने एक पत्थर रखकर सुराख बंद कर दिया। इसके बाद चूहे अपने घर में आराम से रहने लगे।

आज भी जब वे चर्चा करते हैं कि बाघ को कैसे भगाया था तो चारों चूहे ताली बजा-बजाकर मस्ती से हँसते हैं।

पढ़ो और हँसो

एक बच्चा अस्पताल में जन्म लेते ही बोला–नर्स तुम्हारे पास मोबाइल है।

नर्स : हाँ है, क्या करोगे?

बच्चा : ऊपर वाले को फोन करूंगा कि मैं सही सलामत पहुँच गया हूँ।

★ ★ ★

माँ : (रोहित से) उठ जा आलसी, सूरज कब का निकल आया है।

रोहित : तो क्या हुआ माँ, वो सोता भी मुझसे पहले है।

★ ★ ★

ग्राहक : कोई अच्छा–सा कपड़ा दिखाओ।

दुकानदार : प्लेन में दिखाऊँ क्या?

ग्राहक : 'प्लेन' में जाने की क्या जरूरत है? यहीं दुकान में ही दिखा दो।

★ ★ ★

पत्नी : मुझे इस भिखारी से सख्त नफरत है।

पति : क्यों?

पत्नी : मैंने एक बार दया करके उसे खाना खिलाया था। वो दूसरे दिन मुझे एक किताब गिफ्ट कर गया– 'खाना कैसे बनाएं?'

★ ★ ★

मंटू : (पिता से) पिताजी, दरवाजे पर लोग स्वीमिंग पुल के लिए चन्दा मांग रहे हैं?

पिता : बेटा, कोई बात नहीं। उन्हें एक बाल्टी जल दे दो।

– विकास कुमार (बछवाड़ा)

एक चोर ने किसी के घर का दरवाजा खटखटाया। गृहस्वामी ने उठकर दरवाजा खोला तो चोर बोला– सोना कहाँ है?

गृहस्वामी बोला– पूरा घर खाली है भाई। जहाँ चाहो वहाँ सो जाओ।

★ ★ ★

पार्थ : (दीदी से) दीदी तुम रस के साथ मलाई क्यों खा रही हो?

दीदी : क्योंकि मेरा रसमलाई खाने का दिल कर रहा था।

★ ★ ★

अध्यापक: (पार्थ से) उम्मीदवार किसे कहते हैं?

पार्थ : सर, जिसके आने की उम्मीद बार–बार की जाए और जो फिर भी न आए उसे उम्मीदवार कहते हैं।

★ ★ ★

नदी में नहाने के लिए जाते हुए हाथी का पैर चींटियों पर पड़ गया। इससे दो–तीन चींटियां गुस्से में आकर उस हाथी पर चढ़ गई तो रानी चींटी ने उन चींटियों से चिल्लाकर कहा– इस हाथी को डुबो–डुबोकर मारो, डुबो–डुबोकर।

– रजित (ठाकुरपुरा, अम्बाला)

रेस देखते हुए गोलू ने राकेश से कहा– ईनाम किसको मिलेगा?

राकेश सबसे आगे वाले को।

गोलू : तो फिर पीछे वाले क्यों भाग रहे हैं?

★ ★ ★

एक मोटी औरत ने एक चोर को पकड़ा और उसके ऊपर बैठ गई। फिर अपने नौकर से वह बोली– जा, पुलिस को बुला ला।

नौकर बोला– मेरी चप्पल खो गई है।

चोर चिल्लाया– मेरी पहन ले, पर जल्दी जा।

★ ★ ★

नेता जी ने अपने भाषण के दौरान कहा– हमें अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करनी चाहिए।

इतना कहना था कि एक महिला भीड़ में से तुरन्त खड़ी हुई और चिल्लाकर बोली– मैं तो बहुत देर से कोशिश कर रही हूँ पर यह पुलिस वाला बार-बार बैठा देता है।

★ ★ ★

मोटा व्यक्ति : (डॉक्टर साहब) मेरा वजन कैसे कम होगा?

डॉक्टर : अपनी गर्दन को दाएं-बाएं हिलायें।

व्यक्ति : किस समय?

डॉक्टर : जब कोई आपसे खाने को कहे।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

पप्पू : इंस्पेक्टर अंकल, मैं पुलिस स्टेशन देखने आया हूँ।

तभी उसने दीवार पर लगी तस्वीरें देखीं तो पूछा– अंकल जी, ये तस्वीरें किनकी हैं?

इंस्पेक्टर : ये अपराधियों की तस्वीरें हैं। जिन्हें पुलिस पकड़ने की कोशिश कर रही है।

पप्पू : तो आपने इन्हें तस्वीरें खिंचवाने के बाद जाने ही क्यों दिया?

★ ★ ★

नौकर : साहब, मेरी दूर की नज़र खराब हो गई है। मुझे चश्मा बनवा दीजिए।

मालिक : चल मेरे साथ... वह देख वह आसमान में क्या है?

नौकर : वह तो सूरज है।

मालिक : अरे! तेरी नजर तो ठीक है और कितनी दूर तक देखना चाहता है।

★ ★ ★

एक व्यक्ति अपने दोस्त से बोला– कोई ऐसी चीज बताओ जो ब्रेकफास्ट में नहीं खायी जा सकती।

दोस्त : 'एक' क्या मैं 'दो' बताता हूँ।

व्यक्ति : ठीक है, दो बताओ।

दोस्त : 'लंच' और 'डिनर'।

– नेहा गिदवानी (परतवाड़ा)

अजब-गजब

किसने किसका मुखौटा लगा रखा है?

चंदनवन के जानवर भी क्या खूब हैं? खेलते-खेलते इन्होंने अपने मुखौटे आपस में बदल लिए। प्रिय मित्रों, अब आप इनकी सही पहचान करके बताइए कि किसने किसका मुखौटा लगा रखा है?

– प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

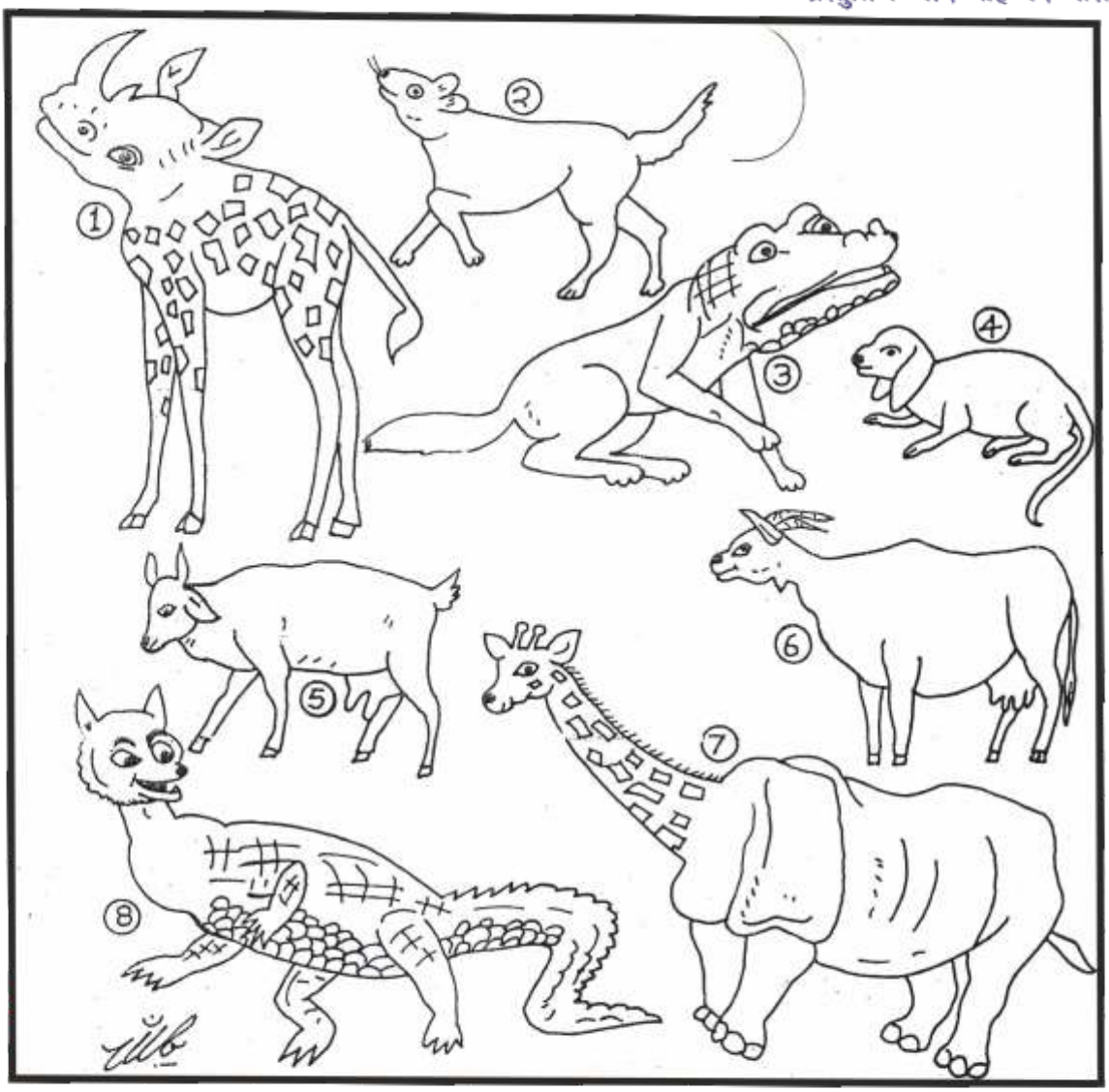

उत्तर :– नकार 1 ने नकार 7 का, नकार 2 ने नकार 4 का, नकार 3 ने नकार 8 का, नकार 4 ने नकार 2 का, नकार 5 ने नकार 6 का, नकार 6 ने नकार 5 का, नकार 7 ने नकार 1 का और नकार 8 ने नकार 3 का मुखौटा लगा रखा है।

दो कविताएं : रामअवध राम

प्रार्थना

प्रभु जी दे दो दया का दान,
जीवन में न हो व्यवधान।

दु:ख संताप सभी मिट जायें,
दूर रहें विपदा न आयें।

मन में हो गुणों का वास,
अवगुण का हो जाये नाश।

सुन्दर हो जाये स्वभाव,
अपनेपन वाला हो भाव।

निस-दिन नाम तुम्हारा ध्याऊँ,
तेरे गुणों का यश गाऊँ।

प्रभु जी दे दो दया का दान,
जीवन में न हो व्यवधान।

चिड़िया

दूर-दूर से तिनका-तिनका।
चुन चुनकर लाती चिड़िया।
कर के कठिन परिश्रम।
सुन्दर नीड़ बनाती चिड़िया।

आँधी तूफानों के आते।
नीड़ में छिप जाती चिड़िया।
अपने को सुरक्षित पाकर।
खूब आनन्द मनाती चिड़िया।

सुबह-सुबह सबसे पहले।
नींद से जग जाती चिड़िया।
उड़-उड़कर डाली-डाली।
गीत सुहाने गाती चिड़िया।

उजियारा होने पर बाहर।
दाना चुगने जाती चिड़िया।
पूरे दिन दाना चुगती।
शाम को घर आती चिड़िया।

अक्टूबर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

दक्ष वाधवानी 12 वर्ष
सिन्धी सोसायटी, पॉवर हाउस के पास,
गोधरा (गुजरात)

निकुंज दोरजी 13 वर्ष
62, दडी कॉलोनी, दाहोद रोड,
धावड़ी भुजंग, गोधरा (गुजरात)

ओम सोमजनी 10 वर्ष
योगेश्वर सोसायटी, पार्वती नगर,
गोधरा (गुजरात)

तनिष्का लालवानी 13 वर्ष
मारुति रेजीडेंसी, महावीर नगर,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

ऋतु आर्या 14 वर्ष
ग्राम : मुझोली, पोस्ट : गोलछीना,
जिला : अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

लवलीन आहूजा (मोहाली), श्लोक तायल (2, ट्रस्ट लेन, भटिण्डा), वंशिका ठाकुर (महांकाल, कांगड़ा), प्रेमप्रकाश, अभिषेक, आर्यन (सरदारशहर, चुरू), भाविका विरदी (नानकनगर, जम्मू), आशिमा महाजन (सुन्दर चक, पठानकोट), गुरुप्रीति, गुरशरण (नांगलोई, दिल्ली), उन्नति (अकालगढ़, युमनानगर), हितेन (इन्द्री, करनाल), नवदिशा त्यागी (लोकनायकपुरम, दिल्ली), रोनित साधवानी (उल्हास नगर), ऐश्वर्या (उपासना इन्क्लेव, देहरादून), पल्लवी (श्रीगंगानगर), मुस्कान पंजवानी (कारंजा लाड, वाशिम), आशीष साहू, प्रीति नागदेव, वंशिका खत्री, नम्रता नेबवानी, राकेश रंजन, आर्ची ददवानी, संदीप साहू, खुशी साहू (रायपुर), परी आसनानी, सोमजनी ओम, ध्रुव किशन, कृष्णा, भूमि, भाविका लालवानी (गोधरा), आर्यन सेठ (बरैनी)।

दिसम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **20 दिसम्बर** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **फरवरी 2019** अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

जैसा कि हमेशा होता है, 28 सितम्बर को अक्टूबर अंक प्राप्त करके मन खुशी से भर गया। यह पत्रिका समय से पहले चलती है।

मुख पृष्ठ पर भारत का गौरवशाली इतिहास दिखाया गया है कि कैसे इस देश में सब मिलजुलकर खुशी से रहते हैं। 'सबसे पहले' में 'गतिवान' रहने की सलाह दी गई है।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य जीवन का वर्णन बहुत ही विस्तार सहित दिया गया है। इसके लिये आप बहुत बधाई के पात्र है। 'गुलाब सा खिलो' में लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन के बारे पढ़कर प्रेरणा मिलती है। लेख और स्तम्भ भी सब बढ़िया हैं।

कहानियां 'वह कौन था' (डॉ. दर्शन सिंह आशट) तथा 'दोषी कौन?' (डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य) प्रेरणादायक थीं।

प्रभु से प्रार्थना है कि हँसती दुनिया ऐसे ही आगे बढ़ती रहे। **– अमिता मोहन (भटिण्डा)**

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है।

मुझे इसमें 'कभी न भूलो' एवं 'अनमोल वचन' ज्ञानवर्द्धक लगते हैं।

अक्टूबर अंक में प्रेरक-प्रसंग 'साधनों का तर्कपूर्ण सही उपयोग' (डॉ. जमनालाल बायती) एवं 'गुलाब -सा खिलो' (पृथ्वीराज) अच्छे एवं शिक्षाप्रद थे।

प्रभु कृपा करे कि ये पत्रिका दिन दुगुनी व रात चौगुनी उन्नति करे।

– मोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

निरंकारी पत्र-पत्रिकाओं की नई सदस्यता दरें

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की असीम कृपा से निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं अनेक प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में छप रही हैं। अभी तक इनकी सदस्यता राशि एक वर्ष के लिए रुपये 150/- और 5 वर्ष के लिए रुपये 700/- थी। सद्गुरु माता जी ने पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इसके साथ ही 3 वर्ष और 11 वर्ष की सदस्यता सुविधा भी उपलब्धा करा दी है। जिसका विवरण निम्नानुसार है-

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

आप इस सुविधा का भरपूर लाभ लें और इनकी बढ़ोतरी के लिए अन्य सज्जनों को भी प्रेरणा दें।

पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता एवं अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क का पता है-

पत्रिका-प्रकाशन विभाग,
सन्त निरंकारी मण्डल,
एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक,
बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009
Phone : +91-11-47660200, Extn. 862
Fax : +91-11-47660300, 27608215
Help Line : 47660360, 859
Whatsapp : 9266629841
Email : patrika@nirankari.org

– सी. एल. गुलाटी, प्रभारी, पत्रिका-प्रकाशन
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2018-20
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)